इस्लाम ने मुक़द्दमात में बुनियादी तौर पर गवाहों के आदिल और नेक चलन होने पर बहुत ज़ोर दिया है क्योंकि मुक़द्दमात में फ़ैसले की बुनियाद गवाह ही होते हैं। गवाहों की तअदील के लिये एक तो यही रास्ता है कि हाकिम की अदालत में कोई मुअतमद (भरोसेमन्द) आदमी उस गवाह की अदालत और नेक चलनी की गवाही दे। दूसरा ये कि हुकूमत के ख़ुफ़िया आदमी उस गवाह के बारे में पूरी मा'लूमात हासिल करके हुकूमत को ख़बर करें। गवाही में झूठ बोलने वालों की बुराइयों में बहुत सी अहादीष़ वारिद हुई हैं और झूठी गवाही को कबीरा गुनाहों में शुमार किया गया है।

2637. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन उमर नुमैरी ने बयान किया, कहा हमसे ष़ौबान ने बयान किया और लैष़ बिन सअद ने बयान किया कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें उर्वा, इब्ने मुसय्यिब, अल्क़मा बिन वक़्क़ास़ और उबैदुल्लाह ने आइशा (रज़ि.) की हदीष़ के बारे में ख़बर दी और उनकी बाहम एक की बात दूसरे की बात की तस्दीक़ करती है कि जब उन पर तोहमत लगाने वालों ने तोहमत लगाई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अली और उसामा (रज़ि.) को अपनी बीवी (आइशा रजि) को अपने से जुदा करने के बारे में मश्वरा करने के लिये बुलाया, क्योंकि आप पर अब तक (इस सिलसिले मे) वह्य नहीं आई थी। उसामा (रज़ि.) ने तो ये कहा कि आपकी बीवी मुत़हहरा (आइशा रज़ि.) में हम सिवाय ख़ैर के और कुछ नहीं जानते। और बरीरा (रज़ि.) (उनकी ख़ादिमा) ने कहा कि मैं कोई ऐसी चीज़ नहीं जानती जिससे उन पर ऐब लगाया जा सके। इतनी बात ज़रूर है कि वो नौ उम्र लड़की हैं कि आटा गूंधती और फिर जा के सो रहती है और बकरी आकर उसे खा लेती है। रसूले करीम (ﷺ) ने (तोहमत के झूठ ष़ाबित होने के बाद) फ़र्माया कि ऐसे शख़्स़ की तरफ़ से कौन उज़्र ख़्वाही करेगा जो मेरी बीवी के बारे में मुझे अज़िय्यत पहुँचाता है। क़सम अल्लाह की! मैंने अपने घर में ख़ैर के सिवा और कुछ न पाया और लोग एक ऐसे शख़्स़ का नाम लेते हैं जिसके बारे में भी मुझे ख़ैर के सिवा और कुछ मा'लूम नहीं। (राजेअ : 2593)

٢٦٣٧- حَدَّثَنَا حَجَّاجٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ النُّمَيْرِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا ثَوْبَانُ، وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ وَابْنُ الْمُسَيَّبِ وَعَلْقَمَةُ بْنُ وَقَّاصٍ وَعُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَنْ حَدِيْثِ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا - وَبَعْضُ حَدِيْثِهِمْ يُصَدِّقُ بَعْضًا - حِيْنَ قَالَ لَهَا أَهْلُ الإِفْكِ مَا قَالُوا فَدَعَا رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلِيًّا وَأُسَامَةَ حِيْنَ اسْتَلْبَثَ الْوَحْيُ يَسْتَأْمِرُهُمَا فِي فِرَاقِ أَهْلِهِ، فَأَمَّا أُسَامَةُ فَقَالَ: أَهْلُكَ وَلاَ نَعْلَمُ إِلاَّ خَيْرًا. وَقَالَتْ بَرِيْرَةُ: إِنْ رَأَيْتُ عَلَيْهَا أَمْرًا أَغْمِصُهُ أَكْثَرَ مِنْ أَنَّهَا جَارِيَةٌ حَدِيْثَةُ السِّنِّ تَنَامُ عَنْ عَجِيْنِ أَهْلِهَا فَتَأْتِي الدَّاجِنُ فَتَأْكُلُهُ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ يَعْذُرُنَا فِي رَجُلٍ بَلَغَنِي أَذَاهُ فِي أَهْلِ بَيْتِي، فَوَ اللهِ مَا عَلِمْتُ مِنْ أَهْلِي إِلاَّ خَيْرًا، وَلَقَدْ ذَكَرُوا رَجُلاً مَا عَلِمْتُ عَلَيْهِ إِلاَّ خَيْرًا)).

[راجع: ٢٥٩٣]

तश्रीह : उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) पर तोहमत का वाक़िया इस्लामी तारीख़ का एक मशहूरतरीन हादष़ा है। जिसमें आँहज़रत (ﷺ) और हज़रत आइशा (रज़ि.) और बहुत से अकाबिर स़हाबा को बहुत तकलीफ़ का सामना करना पड़ा। आख़िर इस बारे में सूरह नूर नाज़िल हुई और अल्लाह पाक ने हज़रत आइशा (रज़ि.) की पाकदामनी ज़ाहिर करने के सिलसिले में कई शानदार बयानात दिये। इमाम बुख़ारी (रह.) ने बाब का मतलब इससे निकाला है कि हज़रत उसामा (रज़ि.) ने हज़रत आइशा (रज़ि.) की तअदील उन लफ़्ज़ों में बयान की जो मक़्स़दे बाब है।

इस इल्ज़ाम का बानी अब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ मर्दूद था जो इस्लाम से दिल में सख़्त कीना रखता था। इल्ज़ाम

M-09825696131

करा दिया। (राजेअ : 88) [راجع: ٨٨]

बाब का तर्जुमा इस तरह साबित हुआ कि उक़्बा और उसकी अहलिया के अज़ीज़ का बयान नफ़ी में था और दूध पिलाने वाली औरत का बयान इष्बात में था। आँहज़रत (ﷺ) ने उसी औरत की गवाही क़ुबूल फ़र्माई। मा'लूम हुआ कि गवाही में इष्बात नफ़ी पर मुक़द्दम है।

बाब 5 : गवाह आदिल, मो'तबर होने ज़रूरी हैं

٥- بَابُ الشُّهَدَاءِ الْعُدُولِ

और अल्लाह तआला ने सूरह तलाक़ में फ़र्माया, कि अपने में से दो आदिल आदमियों को गवाह बना लो, और अल्लाह तआला ने सूरह बक़र: में फ़र्माया कि) गवाहों में से जिन्हें तुम पसन्द करो।

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَأَشْهِدُوا ذَوِي عَدْلٍ مِنْكُمْ﴾ -وَ- ﴿مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَاءِ﴾ [الطلاق: ٢ والبقرة: ٢٨٢]

2641. हमसे हकम बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी ज़ुह्री से, कहा कि मुझसे हुमैद बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन उत्बा ने और उन्होंने उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से सुना, आप बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में लोगों का वह्य के ज़रिये मुआख़ज़ा हो जाता था। लेकिन अब वह्य का सिलसिला ख़त्म हो गया और हम सिर्फ़ उन्हीं उमूर में मुआख़िज़ा करेंगे जो तुम्हारे अमल से हमारे सामने ज़ाहिर होंगे। इसलिये जो कोई ज़ाहिर में हमारे सामने ख़ैर करेगा, हम उसे अमन देंगे और अपने क़रीब रखेंगे। उसके बातिन से हमें कोई सरोकार नहीं होगा। उसका हिसाब तो अल्लाह तआला करेगा और जो कोई हमारे सामने ज़ाहिर में बुराई करेगा तो हम भी उसे अमन नहीं देंगे और न हम उसकी तस्दीक़ करेंगे ख़्वाह वो यही कहता रहे कि उसका बातिन अच्छा है।

٢٦٤١- حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعٍ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوفٍ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُتْبَةَ قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((إِنَّ أُنَاسًا كَانُوا يُؤْخَذُونَ بِالْوَحْيِ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَإِنَّ الْوَحْيَ قَدِ انْقَطَعَ، وَإِنَّمَا نَأْخُذُكُمْ الآنَ بِمَا ظَهَرَ لَنَا مِنْ أَعْمَالِكُمْ، فَمَنْ أَظْهَرَ لَنَا خَيْرًا أَمِنَّاهُ وَقَرَّبْنَاهُ وَلَيْسَ إِلَيْنَا مِنْ سَرِيرَتِهِ شَيْءٌ، اللهُ يُحَاسِبُهُ فِي سَرِيرَتِهِ. وَمَنْ أَظْهَرَ لَنَا سُوْءًا لَمْ نَأْمَنْهُ وَلَمْ نُصَدِّقْهُ وَإِنْ قَالَ إِنَّ سَرِيرَتَهُ حَسَنَةٌ)).

तश्रीह : हज़रत उमर (रज़ि.) के क़ौल से उनके बुक़ूफ़ों का रद्द हुआ जो एक बदकार फ़ासिक़ को दरवेश और वली समझें और ये दा'वा करें कि ज़ाहिर आमाल से किया होता है, दिल अच्छा होना चाहिये। कहो, जब हज़रत उमर (रज़ि.) ऐसे शख़्स को दिल का हाल मा'लूम नहीं हो सकता था तो तुम बेचारे किस खेत की मूली है। दिल का हाल बजुज़ अल्लाह करीम के कोई नहीं जानता। नबी करीम (ﷺ) को भी उसका इल्म वह्य या'नी अल्लाह के बतलाने से होता। हज़रत उमर (रज़ि.) ने क़ायदा बयान किया कि ज़ाहिर की रू से जिसके आमाल शरअ के मुवाफ़िक़ हों उसको अच्छा समझो और जिसके आमाल शरअ के ख़िलाफ़ हों उनको बुरा समझो। अब अगर उसका दिल बिल फ़र्ज़ अच्छा भी होगा जब भी हम उसके बुरा समझने में कोई मुआख़िज़ा वार न होंगे क्योंकि हमने शरीअत के क़ायदे पर अमल किया। अल्बत्ता हम अगर उसको अच्छा समझेंगे तो गुनाहगार होंगे। (वहीदी)

बाब का तर्जुमा इससे निकला कि फ़ासिक़, बदकार की बात न मा'नी जाएगी या'नी उसकी शहादत मक़्बूल न होगी। मा'लूम हुआ कि शाहिद के लिये अदालत ज़रूरी है। अदालत से मुराद ये है कि मुसलमान आज़ाद, आक़िल, बालिग़, नेक

ये भी मक़्सद है कि आदिल गवाह के ज़ाहिरी ह़ालात का दुरुस्त होना ज़रूरी है वरना उसको आदिल न माना जाएगा। इस्लाम का फ़त्वा ज़ाहिरी ह़ालत पर है। बातिन अल्लाह के ह़वाले है। उसमें उन नामनिहाद सूफ़ियों की भी तर्दीद है जिनका ज़ाहिर सरासर ख़िलाफ़े शरअ होता है और बातिन में वो ईमानदार आशिक़े अल्लाह व रसूल बनते हैं। ऐसे मक्कार नामनिहाद सूफ़ियों ने एक ख़िल्क़त को गुमराह कर रखा है। उनमें से कुछ तो इतने बेह़या वाक़ेअ हुए हैं कि नमाज़, रोज़ा की खुले लफ़्ज़ों में तह़क़ीर करते हैं, उलमा की बुराइयाँ करते हैं, शरीअ़त और त़रीक़त को अलग अलग बतलाते हैं। ऐसे लोग सरासर गुमराह हैं। हर्गिज़-हर्गिज़ क़ाबिले क़ुबूलियत नहीं हैं बल्कि वो ख़ुद गुमराह और मख़्लूक़ के गुमराह करने वाले हैं।

ह़ज़रत जुनैद बग़दादी (रह.) का मशहूर क़ौल है कि **कुल्लु ह़क़ीक़तिन ला यश्हदु लहुश्शरउ फहुव ज़िन्दिकतुन** हर वो ह़क़ीक़त जिसकी शहादत शरीअ़त से न मिले वो बद्दीनी और बेईमानी और ज़िन्दीक़ियत है। **नऊज़ुबिल्लाहि मिन शुरूरि अन्फुसिना मिन सय्यातिआमालिना.**

बाब 6 : किसी गवाह को आदिल षाबित करने के लिये कितने आदमियों की गवाही ज़रूरी है?

٦- بَابُ تَعْدِيْلُ كَمْ يَجُوز؟

2642. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया षाबित से और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास से एक जनाज़ा निकला तो लोगों ने उस मय्यत की ता'रीफ़ की, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि वाजिब हो गई। फिर दूसरा जनाज़ा गुज़रा तो लोगों ने उसकी बुराई की या उसके सिवा और अल्फ़ाज़ (उसी मफ़्हूम को अदा करने के लिये) कहे (रावी को शुब्हा है) आप (ﷺ) ने उस पर भी फ़र्माया कि वाजिब हो गई। अ़र्ज़ किया गया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपने उस जनाज़े के बारे में भी फ़र्माया कि वाजिब हो गई और पहले जनाज़े पर भी यही फ़र्माया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ईमानवाली क़ौम की गवाही (बारगाहे इलाही में मक़्बूल है) ये लोग ज़मीन पर अल्लाह के गवाह हैं। (राजेअ : 1367)

٢٦٤٢- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: مَرَّ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ بِجِنَازَةٍ، فَأَثْنَوا عَلَيْهَا خَيْرًا، فَقَالَ: ((وَجَبَتْ)). ثُمَّ مَرَّ بِأُخْرَى فَأَثْنَوا عَلَيْهَا شَرًّا - أَوْ قَالَ : غَيْرَ ذَلِكَ- فَقَالَ: ((وَجَبَتْ)). فَقِيْلَ يَا رَسُولَ اللهِ قُلْتَ لِهَذَا وَجَبَتْ وَلِهَذَا وَجَبَتْ. قَالَ: ((شَهَادَةُ الْقَوْمِ. الْمُؤْمِنُونَ شُهَدَاءُ اللهِ فِي الأَرْضِ)). [راجع: ١٣٦٧]

2643. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे दाऊद बिन अबी फ़ुरात ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा ने बयान किया अबुल अस्वद से कि मैं मदीना आया तो यहाँ वबा फैली हुई थी, लोग बड़ी तेज़ी से मर रहे थे। मैं ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की ख़िदमत में था कि एक जनाज़ा गुज़रा। लोगों ने उस मय्यत की ता'रीफ़ की तो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि वाजिब हो गई। फिर दूसरा गुज़रा लोगों ने उसकी ता'रीफ़ की, ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा वाजिब हो गई। फिर तीसरा गुज़रा तो लोगों ने उसकी बुराई की, ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उसके लिये भी यही कहा कि वाजिब हो गई। मैंने पूछा अमीरुल मोमिनीन! क्या

٢٦٤٣- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ أَبِي الْفُرَاتِ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ ابْنُ بُرَيْدَةَ عَنْ أَبِي الأَسْوَدِ قَالَ: ((أَتَيْتُ الْمَدِيْنَةَ وَقَدْ وَقَعَ بِهَا مَرَضٌ وَهُمْ يَمُوتُونَ مَوتًا ذَرِيْعًا، فَجَلَسْتُ إِلَى عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، فَمَرَّتْ جَنَازَةٌ فَأُثْنِيَ خَيرًا، فَقَالَ عُمَرُ : وَجَبَتْ. ثُمَّ مُرَّ بِأُخْرَى فَأُثْنِيَ خَيْراً فَقَالَ عُمَرُ وَجَبَتْ ثُمَّ

हराम बिन अ़म्र बिन ज़ैद, मनात बिन अ़दी बिन अ़म्र बिन मालिक बिन नज्जार हस्सान और अबू त़लहा को मिला देता है और उबई बिन कअ़ब छठी पुश्त में या'नी अ़म्र बिन मालिक में अबू त़लहा से मिलते हैं, उबई बिन कअ़ब के बेटे, वो क़ैस के, वो उ़बैद के, वो ज़ैद के, वो मुआ़विया के, वो अ़म्र बिन मालिक बिन नज्जार के तो अ़म्र बिन मालिक हस्सान और अबू त़लहा और उबई तीनों को मिला देता है और कुछ ने (इमाम अबू यूसुफ़ इमाम अबू हनीफ़ा के शागिर्द ने) कहा अ़ज़ीज़ों के लिये वसिय्यत करे तो जितने मुसलमान बाप दादा गुज़रे हैं वो सब दाख़िल होंगे।

عَمْرِو بْنِ زَيْدِ مَنَاةَ بْنِ عَدِيِّ بْنِ عَمْرِو بْنِ مَالِكِ بْنِ النَّجَّارِ، فَهُوَ يُجَامِعُ حَسَّانَ وَأَبَا طَلْحَةَ وَأُبَيٌّ إِلَى سِتَّةِ آبَاءٍ إِلَى عَمْرِو بْنِ مَالِكٍ، وَهُوَ أُبَيُّ بْنُ كَعْبِ بْنِ قَيْسِ بْنِ عُبَيْدِ زَيْدِ بْنِ مُعَاوِيَةَ بْنِ عَمْرِو بْنِ مَالِكِ بْنِ النَّجَّارِ، فَعَمْرُو بْنُ مَالِكٍ يَجْمَعُ حَسَّانَ وَأَبَا طَلْحَةَ وَأُبَيًّا. وَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِذَا أَوْصَى لِقَرَابَتِهِ فَهُوَ إِلَى آبَائِهِ فِي الإِسْلاَمِ.

2752. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्होंने इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़लहा से, उन्होंने अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा आँहज़रत (ﷺ) ने अबू त़लहा से फ़र्माया, (जब उन्होंने अपना बाग़ बीरे हाअ अल्लाह की राह में देना चाहा) मैं मुनासिब समझता हूँ तू ये बाग़ अपने अ़ज़ीज़ों को दे दे। अबू त़लहा ने कहा बहुत ख़ूब ऐसा ही करूँगा। फिर अबू त़लहा ने वो बाग़ अपने अ़ज़ीज़ों और चचा के बेटों में बांट दिया और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा जब (सूरह शुअ़रा की) ये आयत उतरी और अपने क़रीब के नाते वालों को (अल्लाह के अ़ज़ाब से) डराओ तो आँहज़रत (ﷺ) क़ुरैश के ख़ानदानों में बनी फ़हर, बनी अ़दी को पुकारने लगे (उनको डराया) और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा जब ये आयत उतरी वन्ज़िर अ़शीरतकल अक़्रबीन आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ क़ुरैश के लोगों! (अल्लाह से डरो) (राजेअ़ : 1461)

٢٧٥٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لأَبِي طَلْحَةَ: ((أَرَى أَنْ تَجْعَلَهَا فِي الأَقْرَبِيْنَ))، قَالَ أَبُو طَلْحَةَ: أَفْعَلُ يَا رَسُولَ اللهِ، فَقَسَمَهَا أَبُو طَلْحَةَ فِي أَقَارِبِهِ وَبَنِي عَمِّهِ)). وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿وَأَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الأَقْرَبِيْنَ﴾ جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يُنَادِي : ((يَا بَنِي فِهْرٍ: يَا بَنِي عَدِيٍّ، لِبُطُونِ قُرَيْشٍ)). وَقَالَ أَبُوهُرَيْرَةَ: لَمَّا نَزَلَت: ﴿وَأَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الأَقْرَبِيْنَ﴾ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ)). [راجع: ١٤٦١]

बाब 11 : क्या अ़ज़ीज़ों मे औ़रतें और बच्चे भी दाख़िल होंगे

١١- بَابُ هَلْ يَدْخُلُ النِّسَاءُ وَالْوَلَدُ فِي الأَقَارِبِ؟

2753. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्होंने ज़ुहरी से, कहा मुझको सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने ख़बर दी कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा जब (सूरह शुअ़रा की) ये आयत अल्लाह तआ़ला ने उतारी

٢٧٥٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيْدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ وَأَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ

أَبَاهُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ أَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الأَقْرَبِينَ﴾ قَالَ: ((يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ - أَوْ كَلِمَةً نَحْوَهَا - اشْتَرُوا أَنْفُسَكُمْ، لاَ أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللهِ شَيْئًا. يَا بَنِي عَبْدِ مَنَافٍ لاَ أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللهِ شَيْئًا. يَا عَبَّاسُ بْنَ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ لاَ أُغْنِي عَنْكَ مِنَ اللهِ شَيْئًا. يَا صَفِيَّةُ عَمَّةَ رَسُولِ اللهِ لاَ أُغْنِي عَنْكِ مِنَ اللهِ شَيْئًا. وَيَا فَاطِمَةُ بِنْتَ مُحَمَّدٍ سَلِينِي مَا شِئْتِ مِنْ مَالِي لاَ أُغْنِي عَنْكِ مِنَ اللهِ شَيْئًا)). تَابَعَهُ أَصْبَغُ عَنِ ابْنِ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ. [طرفاه في: ٣٥٢٧، ٤٧٧١].

और अपने नज़दीक नातेदारों को अल्लाह के अज़ाब से डरा तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़ुरैश के लोगों ! या ऐसा ही कोई और कलिमा तुम लोग अपनी अपनी जानों को (नेक आमाल के बदल) मोल ले लो (बचा लो) मैं अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम न आऊँगा (या'नी उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ मैं कुछ नहीं कर सकने का) अब्दे मुनाफ़ के बेटों ! मैं अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम नहीं आने का। अब्बास बिन मुत्तलिब के बेटे! मैं अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम नहीं आने का। सफ़िया मेरी फूफी! अल्लाह के सामने तुम्हारे कुछ काम नहीं आने का। फ़ातिमा (रज़ि.) बेटी तू चाहे मेरा माल मांग ले लेकिन अल्लाह के सामने तेरे कुछ काम नहीं आएगा। अबुल यमान के साथ हदीष को अस्बग़ ने भी अब्दुल्लाह बिन वहब से, उन्होंने यूनुस से, उन्होंने इब्ने शिहाब से रिवायत किया। (दीगर मक़ाम : 3527, 4771)

तश्रीह : पिछली हदीष में पहले आपने क़ुरैश के कुल लोगों को मुख़ातब किया जो ख़ास आपकी क़ौम के लोग थे। फिर अब्दे मुनाफ़ अपने चौथे दादा की औलाद को। फिर ख़ास अपने चचा और फूफी या'नी दादा की औलाद को फिर ख़ास अपनी औलाद को। इस हदीष से इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये निकाला कि क़राबत वालों मे औरतें दाख़िल हैं क्योंकि हज़रत सफ़िया अपनी फूफी को भी आप (ﷺ) ने मुख़ातब किया और बच्चे भी इसलिये कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) जब ये आयत उतरी कमसिन बच्ची थीं, आप (ﷺ) ने उनको भी मुख़ातब किया।

١٢- بَابُ هَلْ يَنْتَفِعُ الْوَاقِفُ بِوَقْفِهِ؟

बाब 12 : क्या वक़्फ़ करने वाला अपने वक़्फ़ से ख़ुद भी वो फ़ायदा उठा सकता है?

وَقَدِ اشْتَرَطَ عُمَرُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: لاَ جُنَاحَ عَلَى مَنْ وَلِيَهُ أَنْ يَأْكُلَ. وَقَدْ يَلِي الْوَاقِفُ وَغَيْرُهُ. وَكَذَلِكَ كُلُّ مَنْ جَعَلَ بَدَنَةً أَوْ شَيْئًا للهِ فَلَهُ أَنْ يَنْتَفِعَ بِهِ كَمَا يَنْتَفِعُ غَيْرُهُ وَإِنْ لَمْ يَشْتَرِطْ.

और हज़रत उमर (रज़ि.) ने शर्त लगाई थी (अपने वक़्फ़ के लिये) कि जो शख़्स उसका मुतवल्ली हो उसके लिये उस वक़्फ़ में से खा लेने से कोई हर्ज न होगा। (दस्तूर के मुताबिक़) वाक़िफ़ ख़ुद भी वक़्फ़ का मुहतमिम हो सकता है और दूसरा शख़्स भी। इसी तरह अगर किसी शख़्स ने ऊँट या कोई और चीज़ अल्लाह के रास्ते में वक़्फ़ की तो जिस तरह दूसरे उससे फ़ायदा उठा सकते हैं ख़ुद वक़्फ़ करने वाला भी उठा सकता है अगरचे (वक़्फ़ करते वक़्त) उसकी शर्त न लगाई हो।

तश्रीह : वाक़िफ़ अपने वक़्फ़ से फ़ायदा उठा सकता है जब उस चीज़ को ख़ुद अपने ऊपर और नीज़ दूसरों पर वक़्फ़ कर दिया हो या वक़्फ़ में ऐसी शर्त कर ली हो या उसमें से एक हिस्सा अपने लिये ख़ास कर लिया हो या मुतवल्ली

मुस्कुरा रहे थे, मैंने अ़र्ज़ किया कि आप (ﷺ) किस बात पर हंस रहे हैं? फ़र्माया मेरी उम्मत के कुछ लोग मेरे सामने पेश किये गये जो ग़ज़्वा करने के लिये उस बहते दरिया पर सवार होकर जा रहे थे जैसे बादशाह तख़्त पर चढ़ते हैं। मैंने अ़र्ज़ किया फिर आप (ﷺ) मेरे लिये भी दुआ़ कर दीजिए कि अल्लाह तआ़ला मुझे भी उन्हीं में से बना दे। आप (ﷺ) ने उनके लिये दुआ़ की। फिर दोबारा आप (ﷺ) सो गए और पहले की त़रह इस बार भी किया (बेदार होते हुए मुस्कुराए) उम्मे ह़राम (रज़ि.) ने पहले ही की त़रह इस बार भी अ़र्ज़ किया और आप (ﷺ) ने वही जवाब दिया। उम्मे ह़राम (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया आप दुआ़ कर दें कि अल्लाह तआ़ला मुझे भी उन्हीं में से बना दे तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुम सबसे पहले लश्कर के साथ होगी चुनाँचे वो अपने शौहर उ़बादा बिन स़ामित (रज़ि.) के साथ मुसलमानों के सबसे पहले बह़री (समन्दरी) बेड़े में शरीक हुईं। मुआ़विया (रज़ि.) के ज़माने में ग़ज़्वा से लौटते वक़्त जब शाम के साह़िल पर लश्कर उतरा तो उम्मे ह़राम (रज़ि.) के क़रीब एक सवारी लाई गई ताकि उस पर सवार हो जाएँ लेकिन जानवर ने उन्हें गिरा दिया और उसी में उनका इंतिक़ाल हो गया। (राजेअ़ : 2788, 2789)

اسْتَيْقَظَ يَتَبَسَّمُ، فَقُلْتُ: مَا أَضْحَكَكَ؟ قَالَ: ((أُنَاسٌ مِنْ أُمَّتِي عُرِضُوا عَلَيَّ يَرْكَبُونَ هَذَا الْبَحْرَ الأَخْضَرَ كَالْمُلُوكِ عَلَى الأَسِرَّةِ))، قَالَ: فَادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ، فَدَعَا لَهَا. ثُمَّ نَامَ الثَّانِيَةَ، فَفَعَلَ مِثْلَهَا، فَقَالَتْ : مِثْلَ قَوْلِهَا، فَأَجَابَهَا مِثْلَهَا، فَقَالَتْ: ادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ، فَقَالَ: ((أَنْتِ مِنَ الأَوَّلِينَ)). فَخَرَجَتْ مَعَ زَوْجِهَا عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ غَازِيًا أَوَّلَ مَا رَكِبَ الْمُسْلِمُونَ الْبَحْرَ مَعَ مُعَاوِيَةَ، فَلَمَّا انْصَرَفُوا مِنْ غَزْوِهِمْ قَافِلِينَ فَنَزَلُوا الشَّامَ فَقُرِّبَتْ إِلَيْهَا دَابَّةٌ لِتَرْكَبَهَا فَصَرَعَتْهَا فَمَاتَتْ)).

[راجع: ٢٧٨٨، ٢٧٨٩]

अंबिया के ख़्वाब भी वह्य और इल्हाम होते हैं। आपने ख़्वाब में देखा कि आपकी उम्मत के कुछ लोग बड़ी शान और शौकत के साथ बादशाहों की त़रह समुन्दर पर सवार हो रहे हैं। आख़िर आप (ﷺ) का ये ख़्वाब पूरा हुआ और मुसलमानों ने अ़हदे मुआ़विया (रज़ि.) में बह़री बेड़े तैयार करके शाम (सीरिया) पर ह़मला किया, बाब का तर्जुमा इस त़रह़ निकला कि उम्मे ह़राम (रज़ि.) अगरचे जानवर से गिरकर मरीं मगर आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनको मुजाहिदीन में शामिल फ़र्माया और अन्त मिनल् अव्वलीन से आपने पेशीनगोई फ़र्माई।

बाब 9 : जिसको अल्लाह की राह में तकलीफ़ पहुँचे (या'नी उसके किसी अ़ज़्व को स़दमा हो)

٩- بَابُ مَنْ يُنْكَبُ أَوْ يُطْعَنُ فِي سَبِيلِ اللهِ

2801. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ह़ौज़ी ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने, उनसे इस्ह़ाक़ ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने बनू सुलैम के सत्तर आदमी (जो क़ारी थे) बनू आ़मिर के यहाँ भेजे। जब ये सब ह़ज़रात (बीरे मऊ़ना पर) पहुँचे तो मेरे मामू ह़राम बिन मिलह़ान (रज़ि.) ने कहा मैं (बनू सुलैम के यहाँ) आगे जाता हूँ अगर मुझे उन्हों ने इस बात का अमन दे दिया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की बातें उन तक

٢٨٠١- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ الْحَوضِيُّ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ إِسْحَاقَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَقْوَامًا مِنْ بَنِي سُلَيْمٍ إِلَى بَنِي عَامِرٍ فِي سَبْعِينَ، فَلَمَّا قَدِمُوا قَالَ لَهُمْ خَالِي: أَتَقَدَّمُكُمْ، فَإِنْ

पहुँचाऊँ ता बेहतर वरना तुम लोग मेरे क़रीब तो हो ही। चुनाँचे वो उनके यहाँ गये और उन्होंने अमन भी दे दिया। अभी वो क़बीले के लोगों को रसूलुल्लाह (ﷺ) की बातें सुना ही रहे थे कि क़बीले वालों ने अपने एक आदमी (आ़मिर बिन तुफ़ैल) को इशारा किया और उसने आप (रज़ि.) के बरछा मारा जो जिस्म में आर-पार हो गया। उस वक़्त उनकी ज़ुबान से निकला, अल्लाहु अकबर! मैं कामयाब हो गया का'बा के रब की क़सम! उसके बाद क़बीले वाले ह़राम (रज़ि.) के दूसरे साथियों की त़रफ़ (जो सत्तर की ता'दाद में थे) बढ़े और सबको क़त्ल कर दिया। अल्बत्ता एक स़ाहब जो लंगड़े थे, पहाड़ पर चढ़ गए। हम्माम (ह़दीष़ के रावी) ने बयान किया मैं समझता हूँ कि एक साहब और उनके साथी (पहाड़ पर चढ़े थे) (अ़म्र बिन उमय्या ज़मरी) उसके बाद जिब्रईल ने नबी करीम (ﷺ) को ख़बर दी कि आपके साथी अल्लाह तआ़ला से जा मिले हैं, पस अल्लाह ख़ुद भी उनसे ख़ुश है और उन्हें भी ख़ुश कर दिया है। उसके बाद हम (क़ुर्आन की दूसरी आयतों के साथ ये आयत भी) पढ़ते थे (तर्जुमा) हमारी क़ौम के लोगों को ये पैग़ाम पहुँचा दो कि हम अपने रब से आ मिले हैं, पस हमारा रब ख़ुद भी ख़ुश है और हमें भी ख़ुश कर दिया है। उसके बाद ये मन्सूख़ हो गई, नबी करीम (ﷺ) ने चालीस दिन तक सुबह की नमाज़ में क़बीला रअ़ल, ज़क्वान, बनी लह़यान और बनी उ़सय्या के लिये बद दुआ की थी जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह (ﷺ) की नाफ़र्मानी की थी। (राजेअ़: 1001)

أَمَّنُونِي حَتَّى أُبَلِّغَهُمْ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَإِلاَّ كُنْتُمْ مِنِّي قَرِيبًا. فَتَقَدَّمَ فَأَمَّنُوهُ، فَبَيْنَمَا يُحَدِّثُهُمْ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَوْمَؤُوا إِلَى رَجُلٍ مِنْهُمْ فَطَعَنَهُ فَأَنْفَذَهُ، فَقَالَ: اللهُ أَكْبَرُ، فُزْتُ وَرَبِّ الْكَعْبَةِ. ثُمَّ مَالُوا عَلَى بَقِيَّةِ أَصْحَابِهِ فَقَتَلُوهُمْ إِلاَّ رَجُلاً أَعْرَجَ صَعِدَ الْجَبَلَ، قَالَ هَمَّامٌ: فَأُرَاهُ آخَرَ مَعَهُ، فَأَخْبَرَ جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُمْ قَدْ لَقُوا رَبَّهُمْ فَرَضِيَ عَنْهُمْ وَأَرْضَاهُمْ، فَكُنَّا نَقْرَأُ أَنْ بَلِّغُوا قَوْمَنَا أَنْ قَدْ لَقِينَا رَبَّنَا فَرَضِيَ عَنَّا وَأَرْضَانَا، ثُمَّ نُسِخَ بَعْدُ، فَدَعَا عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ صَبَاحًا؛ عَلَى رِعْلٍ وَذَكْوَانَ وَبَنِي لِحْيَانَ وَبَنِي عُصَيَّةَ الَّذِينَ عَصَوُا اللهَ وَرَسُولَهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)).

[راجع: ١٠٠١]

तशरीह : ह़ाफ़िज़ ने कहा उसमें ह़फ़्स़ बिन उ़मर इमाम बुख़ारी के शैख़ से सह्व हो गया है और स़ह़ीह़ यूँ है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने उम्मे सुलैम के एक भाई या'नी ह़राम बिन मिल्ह़ान को सत्तर आदमियों के साथ बनी आमिर की त़रफ़ भेजा था। ये सत्तर आदमी अंसार के क़ारी थे और आपने दीन की ता'लीम फैलाने के लिये क़बीला बनी आ़मिर के यहाँ भेजे थे जिनके लिये ख़ुद उस क़बीला ने दरख़्वास्त की लेकिन रास्ते में बनू सुलैम ने दग़ा की और उन ग़रीब क़ारियों को नाह़क़ क़त्ल कर दिया। बनू सुलैम का सरदार आमिर बिन तुफ़ैल था। लुग़त के सिलसिले में जिन क़बीलों का ज़िक्र रिवायत में आया है ये सब बनू सुलैम की शाख़ें हैं। आयत जिसका ज़िक्र रिवायत में आया है उन आयतों में से है जिनकी तिलावत मन्सूख़ हो गई।

2802. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे अस्वद बिन क़ैस ने और उनसे जुन्दब बिन सुफ़यान (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) किसी लड़ाई के मौक़े पर मौजूद थे और आप (ﷺ) की उँगली ज़ख़्मी हो गई थी।

٢٨٠٢- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ قَيْسٍ عَنْ جُنْدَبِ بْنِ سُفْيَانَ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ

हमने रवानगी का इरादा किया तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने तुम्हें हुक्म दिया था कि फ़लाँ और फ़लाँ को जला देना। लेकिन आग एक ऐसी चीज़ है जिसकी सज़ा सिर्फ़ अल्लाह तआला ही दे सकता है। इसलिये अगर वो तुम्हें मिलें तो उन्हें क़त्ल करना (आग में न जलाना)। (राजेअ : 2954)

فُلاَنًا وَفُلاَنًا فَأَحْرِقُوهُمَا بِالنَّارِ)). ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ أَرَدْنَا الْخُرُوجَ: ((إِنِّي أَمَرْتُكُمْ أَنْ تُحْرِقُوا فُلاَنًا وَفُلاَنًا، وَإِنَّ النَّارَ لاَ يُعَذِّبُ بِهَا إِلاَّ اللهُ، فَإِنْ وَجَدْتُمُوهُمَا فَاقْتُلُوهُمَا)). [راجع: ٢٩٥٤]

तश्रीह : कुछ सहाबा (रज़ि.) ने उसको मुत्लक़न मना जाना है गो बतौरे क़िसास के हो, कुछ ने जाइज़ रखा है जैसे हज़रत अली (रज़ि.) और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) से मन्कूल है। मुहल्लिब ने कहा कि ये मुमानअत तहरीमो नहीं, बल्कि बतौर तवाज़ाअ के है। हमारे ज़माने में तो आलाते हर्ब तोप और बन्दूक़ और डायनामाइट, मिसाइल वग़ैरह सब अंगार हैं और चूँकि काफ़िरों ने उनका इस्ते'माल शुरू कर दिया है, लिहाज़ा मुसलमानों को भी उनका इस्ते'माल दुरुस्त है। (वहीदी)

मुतर्जिम के ख़्याले-नाक़िस में उन जदीद हथियारों का इस्ते'माल अम्रे दीगर है और मुत्लक़ आग में जलाना अम्रे दीगर है जिसे शरअ़न व अख़्लाक़न पसन्द नहीं किया जा सकता।

3017. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे इक्रिमा ने कि अ़ली (रज़ि.) ने एक क़ौम को (जो अ़ब्दुल्लाह बिन सबा की पैरोकार थी और हज़रत अ़ली रज़ि. को अपना ख़ुदा कहती थी) जला दिया था। जब ये ख़बर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) को मिली तो आपने कहा कि अगर मैं होता तो कभी उन्हें न जलाता क्योंकि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया है कि अल्लाह के अ़ज़ाब की सज़ा किसी को न दो, अल्बत्ता मैं उन्हें क़त्ल ज़रूर करता क्योंकि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया है जो शख़्स अपना दीन तब्दील कर दे उसे क़त्ल कर दो। (दीगर मक़ाम : 6922)

٣٠١٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عِكْرِمَةَ أَنَّ عَلِيًّا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ حَرَّقَ قَوْمًا، فَبَلَغَ ابْنَ عَبَّاسٍ فَقَالَ: لَوْ كُنْتُ أَنَا لَمْ أُحَرِّقْهُمْ، لأَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((لاَ تُعَذِّبُوا بِعَذَابِ اللهِ))، وَلَقَتَلْتُهُمْ كَمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ بَدَّلَ دِينَهُ فَاقْتُلُوهُ)).

[طرفه في : ٦٩٢٢].

ये लोग सबाइया थे। अ़ब्दुल्लाह बिन सबा यहूदी के ताबेदार जो मुसलमानों को ख़राब कर डालने के लिये बज़ाहिर मुसलमान हो गया था और अंदर से काफ़िर था। उस मर्दूद ने अपने ताबेदारों को ये ता'लीम की थी कि हज़रत अ़ली (रज़ि.) मआज़अल्लाह आदमी नहीं हैं बल्कि वो ख़ुद अल्लाह हैं। कुछ कहते हैं कि ये बुतों की परस्तिश करते थे। राफ़ज़ियों में एक फ़िर्क़ा नसीरी है जो हज़रत अ़ली (रज़ि.) को ख़ुदा-ए-बुज़ुर्ग और इमाम जा'फ़र सादिक़ को ख़ुदा-ए-ख़ौरिद कहता है, **ला हौल व ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह.** (वहीदी)

बाब 150 : (अल्लाह तआ़ला का सूरह मुहम्मद में ये फ़र्माना) कि क़ैदियों को मुफ़्त एहसान रखकर छोड़ दो या फ़िदया लेकर

١٥٠- بَابُ ﴿فَإِمَّا مَنًّا بَعْدُ وَإِمَّا فِدَاءً﴾ [محمد : ٤]

इस बाब में ष़मामा की हदीष़ है और अल्लाह तआ़ला का इर्शाद कि, नबी के लिये मुनासिब नहीं कि क़ैदी अपने पास रखे, जब तक काफ़िरों का ख़ूब सत्यानास न कर दे।

فِيهِ حَدِيثُ ثُمَامَةَ. وَقَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ تَكُونَ لَهُ أَسْرَى حَتَّى يُثْخِنَ فِي الأَرْضِ -حَتَّى يَغْلِبَ فِي الأَرْضِ-

हज़रत सअ़द (रज़ि.) का फ़ैसला हालाते हाज़रा के तहत बिलकुल मुनासिब था और उसके बग़ैर क़यामे अमन नामुम्किन था। वो बनू क़ुरैज़ा के यहूदियों की फ़ितरत से वाक़िफ़ थे, उनका ये फ़ैसला यहूदी शरीअ़त के मुताबिक़ था।

बाब 169 : क़ैदी को क़त्ल करना और किसी को खड़ा करके निशाना बनाना

١٦٩- بَابُ قَتْلِ الأَسِيرِ وَقَتْلِ الصَّبر

जिसको अ़रबी में क़त्ले स़ब्र कहते हैं। वो ये है कि जानदार आदमी हो या जानवर उसको किसी झाड़ या पेड़ से बाँध देना और तीर या गोली का निशाना बनाना, इस बाब को लाकर इमाम बुख़ारी (रह.) ने उन लोगों का रद्द किया है जो क़ैदियों को क़त्ल करना जाइज़ नहीं रखते।

3044. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़तहे मक्का के दिन जब शहर में दाख़िल हुए तो आपके सरे मुबारक पर ख़ूद था। आप जब उसे उतार रहे थे तो एक शख़्स़ (अबूबर्ज़ा असलमी) ने आकर आपको ख़बर दी कि इब्ने ख़त्तल (इस्लाम का बदतरीन दुश्मन) का'बा के पर्दे से लटका हुआ है। आपने फ़र्माया उसे वहीं क़त्ल कर दो। (राजेअ़ : 1864)

٣٠٤٤- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ دَخَلَ عَامَ الْفَتْحِ وَعَلَى رَأْسِهِ الْمِغْفَرُ، فَلَمَّا نَزَعَهُ جَاءَ رَجُلٌ فَقَالَ: إِنَّ ابْنَ خَطَلٍ مُتَعَلِّقٌ بِأَسْتَارِ الْكَعْبَةِ، فَقَالَ: ((اقْتُلُوهُ)).

[راجع: ١٨٤٦]

ये अ़ब्दुल्लाह बिन ख़त्तल कमबख़्त मुर्तद होकर एक मुसलमान का ख़ून करके काफ़िरों में मिल गया था और आँहज़रत (ﷺ) की और मुसलमानों की हिज्व (निन्दा) वेश्याओं से गवाता। ये ह़दीष़ उस ह़दीष़ की मुख़स्स़स़ है कि जो शख़्स़ मस्जिदे ह़राम में आ जाए वो बेख़ौफ़ है और इससे ये निकला कि मस्जिदे ह़राम में ह़द्दे क़िसास़ लिया जा सकता है। ख़ूद, लोहे का टोप जो मैदाने जंग में सर के बचाने के लिये इस्ते'माल किया जाता था जिस त़रह़ लोहे के कुर्ते (ज़िरह) से बाक़ी बदन को बचाया जाता था।

बाब 170 : अपने तईं क़ैद करा देना और जो शख़्स़ क़ैद न कराये उसका हुक्म

और क़त्ल के वक़्त दो रकअ़त नमाज़ पढ़ना.

١٧٠- بَابُ هَلْ يَسْتَأْسِرُ الرَّجُلُ؟ وَمَنْ لَمْ يَسْتَأْسِرْ، وَمَنْ رَكَعَ رَكْعَتَيْنِ عِنْدَ الْقَتْلِ

3045. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उन्हें अ़म्र बिन अबी सुफ़यान बिन उसैद बिन जारिया ष़क़्फ़ी ने ख़बर दी, वो बनी ज़ुहरा के हलीफ़ थे और हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के दोस्त, उन्होंने कहा कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दस स़हाबा की एक जमाअ़त कुफ़्फ़ार की जासूसी के लिये भेजी, उस जमाअ़त का अमीर आ़सिम बिन उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के नाना आ़सिम बिन ष़ाबित अंसारी (रज़ि.) को बनाया और जमाअ़त रवाना हो गई। जब ये लोग मुक़ामे हिदात पर पहुँचे जो उ़स्फ़ान और मक्का के बीच में है तो क़बीला हुज़ैल की

٣٠٤٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ أَبِي سُفْيَانَ بْنِ أَسِيْدِ بْنِ جَارِيَةَ الثَّقَفِيُّ - وَهُوَ حَلِيْفٌ لِبَنِي زُهْرَةَ، وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ أَبِي هُرَيْرَةَ - أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَعَثَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَشَرَةَ رَهْطٍ سَرِيَّةً عَيْنًا، وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ عَاصِمَ

एक शाख़ बनु लह्यान को किसी ने ख़बर दे दी और उस क़बीले के दो सौ तीरंदाज़ों की एक जमाअत उनकी तलाश में निकली, ये सब सहाबा के क़दमों के निशानों से अंदाज़ा लगाते हुए चलते-चलते आख़िर एक ऐसी जगह पर पहुँच गये जहाँ सहाबा ने बैठकर खजूरें खाई थीं, जो वो मदीना मुनव्वरा से अपने साथ लेकर चले थे। पीछा करने वालों ने कहा कि ये (गुठलियाँ) तो यष्रिब (मदीना) की (खजूरों की) हैं और फिर क़दम के निशानों से अंदाज़ा करते हुए आगे बढ़ने लगे। आख़िर आसिम (रज़ि.) और उनके साथियों ने जब उन्हें देखा तो उन सबने एक पहाड़ की चोटी पर पनाह ली, मुश्रिकीन ने उनसे कहा कि हथियार डालकर नीचे उतर आओ, तुमसे हमारा अ़हद व पैमान है। हम किसी शख़्स को भी क़त्ल नहीं करेंगे। आसिम बिन षाबित (रज़ि.) मुहिम के अमीर ने कहा कि मैं तो आज किसी सूरत में भी एक काफ़िर की पनाह में नहीं उतरूँगा। ऐ अल्लाह! हमारी हालत से अपने नबी को ख़बर कर दे। इस पर उन काफ़िरों ने तीर बरसाने शुरू कर दिये और आसिम (रज़ि.) और सात दूसरे सहाबा को शहीद कर डाला और बाक़ी तीन सहाबी उनके अ़हद व पैमान पर उतर आए, ये ख़ुबैब अंसारी (रज़ि.), इब्ने दष़िना (रज़ि.) और एक तीसरे सहाबी (अ़ब्दुल्लाह बिन त़ारिक़ बलवी रज़ि.) थे। जब ये सहाबी उनके क़ाबू में आ गये तो उन्होंने अपनी कमानों के तांत उतारकर उनको उनसे बाँध लिया, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन त़ारिक़ (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह की क़सम! ये तुम्हारी पहली ग़द्दारी है। मैं तुम्हारे साथ हर्गिज़ न जाऊँगा बल्कि मैं तो उन्हीं हज़रत का उस्वा इख़्तियार करूँगा, उनकी मुराद शुह्दा से थी, मगर मुश्रिकीन उन्हें खींचने लगे और ज़बरदस्ती अपने साथ ले जाना चाहा। जब वो किसी तरह न गये तो उनको भी शहीद कर दिया। अब ये ख़ुबैब (रज़ि.) और इब्ने दष़िना (रज़ि.) को साथ लेकर चले और उनको मक्का में ले जाकर बेच दिया। ये जंगे बद्र के बाद का वाक़िया है। ख़ुबैब (रज़ि.) को हारिष़ बिन आ़मिर बिन नौफ़िल बिन अ़ब्दे मुनाफ़ के लड़कों ने ख़रीद लिया, ख़ुबैब (रज़ि.) ने ही बद्र की लड़ाई में हारिष़ बिन आ़मिर को क़त्ल किया था। आप उनके यहाँ कुछ दिनों तक क़ैदी बनकर रहे, (ज़ुह्री ने बयान किया) कि मुझे उ़बैदुल्लाह बिन अ़याज़ ने ख़बर दी और उन्हें हारिष़ की बेटी (ज़ैनब

بْنَ ثَابِتٍ الأَنْصَارِيَّ - جَدَّ عَاصِمِ بْنِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ - فَانْطَلَقُوا، حَتَّى إِذَا كَانُوا بِالْهَدَأَةِ - وَهُوَ بَيْنَ عُسْفَانَ وَمَكَّةَ - وَذُكِرُوا لِحَيٍّ مِنْ هُذَيْلٍ يُقَالُ لَهُمْ بَنُو لِحْيَانَ، فَنَفَرُوا لَهُمْ قَرِيبًا مِنْ مِائَتَيْ رَجُلٍ كُلُّهُمْ رَامٍ، فَاقْتَصُّوا آثَارَهُمْ حَتَّى وَجَدُوا مَأْكَلَهُمْ تَمْرًا تَزَوَّدُوهُ مِنَ الْمَدِينَةِ فَقَالُوا هَذَا تَمْرُ يَثْرِبَ فَاقْتَصُّوا آثَارَهُمْ. فَلَمَّا رَآهُمْ عَاصِمٌ وَأَصْحَابُهُ لَجَؤُوا إِلَى فَدْفَدٍ، وَأَحَاطَ بِهِمُ الْقَوْمُ، فَقَالُوا لَهُمْ: انْزِلُوا وَأَعْطُونَا بِأَيْدِيكُمْ، وَلَكُمُ الْعَهْدُ وَالْمِيثَاقُ وَلاَ نَقْتُلُ مِنْكُمْ أَحَدًا. قَالَ عَاصِمُ بْنُ ثَابِتٍ أَمِيرُ السَّرِيَّةِ: أَمَّا أَنَا فَوَ اللَّهِ لاَ أَنْزِلُ الْيَوْمَ فِي ذِمَّةِ كَافِرٍ، اللَّهُمَّ أَخْبِرْ عَنَّا نَبِيَّكَ، فَرَمَوْهُمْ بِالنَّبْلِ، فَقَتَلُوا عَاصِمًا فِي سَبْعَةٍ. فَنَزَلَ إِلَيْهِمْ ثَلاَثَةُ رَهْطٍ بِالْعَهْدِ وَالْمِيثَاقِ، مِنْهُمْ خُبَيْبٌ الأَنْصَارِيُّ وَابْنُ دَثِنَةَ وَرَجُلٌ آخَرُ. فَلَمَّا اسْتَمْكَنُوا مِنْهُمْ أَطْلَقُوا أَوْتَارَ قِسِيِّهِمْ فَأَوْثَقُوهُمْ، فَقَالَ الرَّجُلُ الثَّالِثُ: هَذَا أَوَّلُ الْغَدْرِ، وَاللَّهِ لاَ أَصْحَبُكُمْ، إِنَّ فِي هَؤُلاَءِ لأُسْوَةً - يُرِيدُ الْقَتْلَى - فَجَرَّرُوهُ وَعَالَجُوهُ عَلَى أَنْ يَصْحَبَهُمْ فَأَبَى، فَقَتَلُوهُ، فَانْطَلَقُوا بِخُبَيْبٍ وَابْنِ دَثِنَةَ حَتَّى بَاعُوهُمَا بِمَكَّةَ بَعْدَ وَقِيعَةِ بَدْرٍ، فَابْتَاعَ خُبَيْبًا بَنُو الْحَارِثِ بْنِ عَامِرِ بْنِ نَوْفَلِ بْنِ عَبْدِ

(राजेअ : 97)

وَشُعْبَانَ)). [راجع: ٦٧]

तश्रीह : हुआ ये था कि अरबों की ये भी एक जहालत थी कि वो कभी मुहर्रम को सफ़र कर देते। कहीं अपने अग़राज़े फ़ासिदा के तहत ज़िल्हिज्ज को मुहर्रम बना देते। ग़र्ज़ कुछ अजीब ख़ब्त मचा रखा था। आँहज़रत (ﷺ) को अल्लाह पाक ने सहीह महीना बतला दिया। ज़माना के घूम आने से यही मतलब है कि जो असल महीना उस दिन से शुरू हुआ था, जिस दिन उसने ज़मीन आसमान पैदा किये थे। इसी हिसाब से अब सहीह महीना क़ायम हो गया। उससे क़मरी महीनों की फ़ज़ीलत भी षबित हुई, जिनसे माह व साल का हिसाब ऐन फ़ितरत के मुताबिक़ है। जिसका दिन शाम को ख़त्म होता और सुबह से शुरू होता है। उसका महीना कभी तीस दिन का और कभी 29 दिन का होता है। उसका हिसाब हर मुल्क में रूइयते हिलाल पर मौक़ूफ़ है।

٣١٩٨- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ سَعِيْدِ بْنِ زَيْدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ نُفَيْلٍ: أَنَّهُ خَاصَمَتْهُ أَرْوَى - فِي حَقٍّ زَعَمَتْ أَنَّهُ انْتَقَصَهُ لَهَا - إِلَى مَرْوَانَ، فَقَالَ سَعِيْدٌ: أَنَا أَنْتَقِصُ مِنْ حَقِّهَا شَيْئًا؟ أَشْهَدُ لَسَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((مَنْ أَخَذَ شِبْرًا مِنَ الأَرْضِ ظُلْمًا فَإِنَّهُ يُطَوَّقُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ سَبْعِ أَرْضِيْنَ)). قَالَ ابْنُ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: لِي سَعِيْدُ بْنُ زَيْدٍ: ((دَخَلْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ . .)). [راجع: ٢٤٥٢]

3198. हमसे उबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल (रज़ि.) ने कि अर्वा बिन्ते अबी औस से उनका एक (ज़मीन के) बारे में झगड़ा हुआ। जिसके बारे में अरवा कहती थी कि सईद ने मेरी ज़मीन छीन ली। ये मुक़द्दमा ख़लीफ़ा मरवान के यहाँ फ़ैसला के लिये गया जो मदीना का हाकिम था। सईद (रज़ि.) ने कहा भला क्या मैं उनका हक़ दबा लूँगा, मैं गवाही देता हूँ कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना है कि जिसने एक बालिश्त ज़मीन भी ज़ुल्म से किसी की दबा ली तो क़यामत के दिन सातों ज़मीनों का तौक़ उसकी गर्दन में डाला जाएगा। इब्ने अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, और उनसे सईद बिन ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में मौजूद था (तब आपने ये हदीष बयान की थी)। (राजेअ : 2452)

٣- بَابُ فِي النُّجُومِ

बाब 3 : सितारों का बयान

وَقَالَ قَتَادَةُ ﴿وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ﴾ [الملك:٥]: خَلَقَ هَذِهِ النُّجُومَ لِثَلاَثٍ: جَعَلَهَا زِيْنَةً لِلسَّمَاءِ، وَرُجُومًا لِلشَّيَاطِيْنِ، وَعَلاَمَاتٍ يُهْتَدَي بِهَا، فَمَنْ تَأَوَّلَ فِيْهَا بِغَيْرِ ذَلِكَ أَخْطَأَ وَأَضَاعَ نَصِيْبَهُ وَتَكَلَّفَ مَا لاَ عِلْمَ لَهُ بِهِ.

क़तादा ने (क़ुर्आन मजीद की इस आयत के बारे में), कि मैंने ज़ीनत दी आसमाने दुनिया को (तारों के) चराग़ों से कहा कि अल्लाह तआला ने उन सितारों को तीन फ़ायदे के लिये पैदा किया है। उन्हें आसमान की ज़ीनत बनाया, शयातीन पर मारने के लिये बनाया। और (रात की अंधेरियों मे) उन्हें सहीह रास्ते पर चलते रहने के लिये निशानात क़रार दिया। पस जिस शख़्स ने उनके सिवा दूसरी बातें कहीं, उसने ग़लती की, अपना हिस्सा तबाह

किया (अपना वक़्त ज़ाया किया या अपना ईमान खोया) और जो बात ग़ैब की मा'लूम नहीं हो सकती उसको उसने मा'लूम करना चाहा। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि सूरह कहफ़ में लफ़्ज़ हशीम है उसका मा'नी मवेशियों का चारा। ये लफ़्ज़ सूरह अबस में है और सूरह रह्मान में लफ़्ज़ अल अनाम बामा'नी मख़्लूक़ है और लफ़्ज़ बरज़ख़ बमा'नी पर्दा है। और मुजाहिद ताबेई ने कहा कि लफ़्ज़ अल्फ़ाफ़ा बमा'नी मुतल्लफ़ा है। उसके मा'नी गहरे लिपटे हुए। अल ग़लब भी बमा'नी अल् मुतल्लफा और लफ़्ज़ फ़िराशा बमा'नी मिहादा है। जैसे अल्लाह तआला ने सूरह बक़रः में फ़र्माया। वलकुम फ़िल् अरज़ि मुस्तक़र्र (मुस्तक़र्र भी बमा'नी मिहाद है) और सूरह अअराफ़ में जो लफ़्ज़ नकिदा है उसका मा'नी थोड़ा है।

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿هَشِيمًا﴾ مُتَغَيِّرًا. وَالأَبُّ: مَا يَأْكُلُ الأَنْعَامُ. وَالأَنَامُ الْخَلْقُ. بَرْزَخٌ: حَاجِبٌ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿أَلْفَافًا﴾: مُلْتَفَّةً. وَالْغُلْبُ: الْمُلْتَفَّةُ. فِرَاشًا: مِهَادًا. كَقَوْلِهِ: ﴿وَلَكُمْ فِي الأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ﴾، ﴿نَكِدًا﴾: قَلِيلاً.

तश्रीह : हज़रत क़तादा के क़ौल को अब्द बिन हुमैद ने वस्ल किया है। उससे सितारा शनासों (ज्योतिषियों) का रद्द हुआ जो गुमान करते हैं कि सितारों से लोगों पर असर पड़ता है। सच फ़र्माया कि **कज़िबल्मुन्जिमून व रब्बिल कअबति** का'बा के रब की क़सम नजूमी झूठे हैं जो सितारों को जुम्ला ताषीरात का मालिक बताते हैं।

बाब 4 : सूरह रह्मान की उस आयत की तफ़्सीर कि सूरज और चाँद दोनों हिसाब से चलते हैं

٤- بَابُ صِفَةِ الشَّمْسِ وَالْقَمَرِ ﴿بِحُسْبَانٍ﴾

मुजाहिद ने कहा या'नी चक्की की तरह घूमते हैं और दूसरे लोगों ने यूँ कहा या'नी हिसाब से मुक़र्ररह मंजिलों में फ़िरते हैं, ज़्यादा नहीं बढ़ सकते। लफ़्ज़े हुस्बान हिसाब की जमा है। जैसे लफ़्ज़ शिहाब की जमा शह्बान है। और सूरह वश् शम्स मे जो लफ़्ज़ ज़ुहाहा आया है। ज़ुहा रोशनी को कहते हैं और सूरह यासीन में जो ये आया है कि सूरज चाँद को नहीं पा सकता, या'नी एक की रोशनी दूसरे को मांद नहीं कर सकती न उनको ये बात सज़ावार है और उसी सूरत में जो अल्फ़ाज़ वल्लैलु साबिक़ुन्नहार हैं उनका मत़लब ये कि दिन और रात हर एक-दूसरे के त़ालिब होकर लपके जा रहे हैं और उसी सूरह में लफ़्ज़ अन्सलख़ा का मा'नी ये है कि दिन को रात से और रात को दिन से मैं निकाल लेता हूं और सूरह हाक़्क़ा में जो वाहिया का लफ़्ज़ है। वहिया के मा'नी फट जाना, और उसी सूरत में जो ये है (वल मलकु अला अरजाइहा) या'नी फ़रिश्ते आसमानों के किनारों पर होंगे जब तक वो फटेगा नहीं। जैसे कहते हैं वो कुँए के किनारे पर है और वन् नाज़िआत में जो लफ़्ज़ व अग़्तशा और सूरह

قَالَ مُجَاهِدٌ كَحُسْبَانِ الرَّحَى. وَقَالَ غَيْرُهُ : بِحِسَابٍ وَمَنَازِلَ لاَ يَعْدُوَانِهَا. حُسْبَانٌ: جَمَاعَةُ الْحِسَابِ، مِثْلُ شِهَابٍ وَشُهْبَانٍ. ضُحَاهَا: ضَوْؤُهَا. أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ: لاَ يَسْتُرُ ضَوْءُ أَحَدِهِمَا ضَوْءَ الآخَرِ، وَلاَ يَنْبَغِي لَهُمَا ذَلِكَ. سَابِقُ النَّهَارِ : يَتَطَالَبَانِ حَثِيثَانِ. نَسْلَخُ: نُخْرِجُ أَحَدَهُمَا مِنَ الآخَرِ، وَنُجْرِي كُلَّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا: وَاهِيَةٌ: وَهْيُهَا وَتَشَقُّقُهَا. أَرْجَائِهَا: مَا لَمْ يَنْشَقَّ مِنْهَا، فَهِيَ عَلَى حَافَتَيْهَا كَقَوْلِكَ: عَلَى أَرْجَاءِ الْبِئْرِ. أَغْطَشَ وَجَنَّ: أَظْلَمَ. وَقَالَ الْحَسَنُ: كُوِّرَتْ تُكَوَّرُ حَتَّى يَذْهَبَ ضَوْؤُهَا. وَاللَّيْلِ وَمَا وَسَقَ:

जुदा चलने वाली हवाएँ लवाक़िह़ लाक़ितुन की जमा है या'नी वो हवाएँ जो पानी को उठाए हुए चलती हैं गोया ह़ामला हैं। मौलाना जमालुद्दीन अफ़ग़ानी कहते हैं कि ह़ामला करने वाली हवा का मा'नी उसूले नबातात की रू से ठीक है क्योंकि इल्मे नबातात में षाबित हुआ है कि हवा नर पेड़ का माद्दा उड़ाकर मादा पेड़ पर ले जाती है। इस वजह से पेड़ ख़ूब फलता फूलता है गोया हवा दरख़्तों को ह़ामला करती है। तह़क़ीक़ात से भी यही मुशाहिदा हुआ है।

3205. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ह़कम ने, उनसे मुजाहिद ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बादे स़बा (मश्‍रिक़ी हवा) के ज़रिया मेरी मदद की गई और क़ौमे आ़द, बादे दबूर (मग़्‍रिबी हवा) से हलाक कर दी गई थी। (राजेअ़ : 1035)

٣٢٠٥- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((نُصِرْتُ بِالصَّبَا أُهْلِكَتْ عَادٌ بِالدَّبُورِ))
[راجع: ١٠٣٥]

3206. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने जुरैज ने, उनसे अ़ता ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) बादल का कोई ऐसा टुकड़ा देखते जिससे बारिश की उम्मीद होती तो आप कभी आगे आते, कभी पीछे जाते, कभी घर के अंदर तशरीफ़ लाते, कभी बाहर आ जाते और चेहर-ए-मुबारक का रंग बदल जाता लेकिन जब बारिश होने लगती तो फिर ये कैफ़ियत बाक़ी न रहती। एक बार ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने उसके बारे में आपसे पूछा। तो आपने फ़र्माया। मैं नहीं जानता मुम्किन है ये बादल भी वैसा ही हो जिसके बारे में क़ौमे आ़द ने कहा था, जब उन्होंने बादल को अपनी वादियों की त़रफ़ आते देखा था। आख़िर आयत तक (कि उनके लिये रह़मत का बादल आया है, ह़ालाँकि वो अ़ज़ाब का बादल था)। (दीगर मक़ाम : 4829)

٣٢٠٦- حَدَّثَنَا مَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا رَأَى مَخِيلَةً فِي السَّمَاءِ أَقْبَلَ وَأَدْبَرَ وَدَخَلَ وَخَرَجَ وَتَغَيَّرَ وَجْهُهُ، فَإِذَا أَمْطَرَتِ السَّمَاءُ سُرِّيَ عَنْهُ، فَعَرَّفَتْهُ عَائِشَةُ ذَلِكَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَمَا أَدْرِي! كَمَا قَالَ قَوْمٌ: ﴿فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ﴾)) الآية [الأحقاف : ٢٤].
[طرفه في : ٤٨٢٩].

तश्रीह़ : हवा भी अल्लाह की एक मख़्लूक़ है जो मुख़्तलिफ़ ताष़ीर रखती है और मख़्लूक़ात की ज़िन्दगी में जिसका क़ुदरत ने बड़ा दख़ल रखा है। क़ौमे आद पर अल्लाह ने क़ह़त का अ़ज़ाब नाज़िल किया। उन्होंने अपने कुछ लोगों को मक्का शरीफ़ भेजा कि वहाँ जाकर बारिश की दुआ करें। मगर वहाँ वो लोग ऐ़श व इ़शरत में पड़कर दुआ करना भूल गये इधर क़ौम की बस्तियों पर बादल छाये। क़ौम ने समझा कि ये हमारे उन आदमियों की दुआ़ओं का अष़र है। मगर उस बादल ने अ़ज़ाब की शक्ल इख़्तियार करके उस क़ौम को तबाह कर दिया।

बाब 6 : फ़रिश्तों का बयान

٦- بَابُ ذِكْرِ الْمَلاَئِكَةِ

मिन जुम्ला उसूले ईमान में एक ये भी है कि अल्लाह के फ़रिश्तों पर ईमान लाए। वो अल्लाह के मुअ़ज़्ज़ज़ बन्दे हैं। उनके जिस्म लत़ीफ़ हैं वो हर शक्ल में जाहिर हो सकते हैं। वो सब नेक और अल्लाह के ताबेदार बन्दे हैं। फ़रिश्तों का इंकार करना कुफ़्र है। उनके वजूद पर तमाम कुतुबे आसमानी व अंबिया-ए-किराम का इत्तिफ़ाक़ है।

क़ाल जुम्हूरू अहलिल्कलामि मिनल्मुस्लिमीन अल्मलाइकतु अज्सामुन लत़ीफतुन उ‌अ़तीयत क़ुदरतुन अलत्तशक्कुलि बिअश्कालिन मुख्तलिफतिन व मसाकिनुहा अस्समावातव अब्तलमन क़ाल इन्नहल्कवाकिबु औ इन्नहल्अन्फसुल्ख़ैरतुल्लती फारकत अज्सादहा व ग़ैरहू ज़ालिक मिनल्अक़्वालिल्लती ला यूजदु

आमादा किया। अल्लाह पाक उन सबको बरकाते दारेन से नवाज़ियो। आमीन षुम्म आमीन।

3209. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको मुख़लद ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे मूसा बिन उ़क़्बा ने ख़बर दी, उन्हे नाफ़ेअ ने, उन्होंने बयान किया कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। और इस रिवायत की मुताबअ़त अबू आ़सिम ने इब्ने जुरैज से की है कि मुझे मूसा बिन उ़क़्बा ने ख़बर दी उन्हें नाफ़ेअ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) से फ़र्माता है कि अल्लाह तआ़ला फ़लाँ शख़्स से मुहब्बत करता है। तुम भी इससे मुहब्बत रखो, चुनाँचे जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) भी उससे मुहब्बत रखने लगते हैं। फिर जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) तमाम अहले आसमान को पुकार कर कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला फ़लाँ शख़्स से मुहब्बत रखता है। इसलिये तुम सब लोग उससे मुहब्बत रखो, चुनाँचे तमाम आसमान वाले उससे मुहब्बत रखने लगते हैं। उसके बाद रूए ज़मीन वाले भी उसको मक़्बूल समझते हैं। (दीगर मक़ाम : 6040, 7485)

٣٢٠٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ قَالَ أَخْبَرَنَا مَخْلَدٌ، قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ قَالَ: قَالَ أَبُوهُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَتَابَعَهُ أَبُو عَاصِمٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِيْ مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا أَحَبَّ اللهُ الْعَبْدَ نَادَى جِبْرِيْلَ: إِنَّ اللهَ يُحِبُّ فُلاَنًا فَأَحْبِبْهُ، فَيُحِبُّهُ جِبْرِيْلُ. فَيُنَادِي جِبْرِيْلُ فِي أَهْلِ السَّمَاءِ. إِنَّ اللهَ يُحِبُّ فُلاَنًا فَأَحِبُّوهُ، فَيُحِبُّهُ أَهْلُ السَّمَاءِ. ثُمَّ يُوضَعُ لَهُ الْقَبُولُ فِي الأَرْضِ)).

[طرفاه في : ٦٠٤٠، ٧٤٨٥].

तश्रीह : इस्माईल की रिवायत में इतना ज़्यादा है कि जब अल्लाह किसी बन्दे से दुश्मनी करता है तो जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) से ज़ाहिर करता है फिर जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) और सारे फ़रिश्ते उसके दुश्मन हो जाते हैं यहाँ तक कि रूए ज़मीन पर उसके लिये बुराई फैल जाती है। इस ह़दीष़ से अल्लाह के कलाम में आवाज़ और पुकार षाबित हुई और उन लोगों का रद्द हुआ जो कहते हैं कि अल्लाह के कलाम में स़ौत (आवाज़) और हुरूफ़ नहीं हैं।

3210. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें लैष़ ने ख़बर दी, उनसे इब्ने अबी जा'फ़र ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हहरा आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आपने फ़र्माया था कि फ़रिश्ते अ़नान मे उतरते हैं और अ़नान से मुराद बादल हैं। यहाँ फ़रिश्ते उन का़मों का ज़िक्र करते हैं जिनका फ़ैसला आसमान में हो चुका होता है। और यहीं से शयातीन कुछ बातें चोरी छुपे उड़ा लेते हैं। फिर काहिनों को उसकी ख़बर कर देते

٣٢١٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي جَعْفَرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهَا قَالَتْ سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ الْمَلاَئِكَةَ تَنْزِلُ فِي الْعَنَانِ - وَهُوَ السَّحَابُ - فَتَذْكُرُ الأَمْرَ قُضِيَ فِي السَّمَاءِ، فَتَسْتَرِقُ الشَّيَاطِيْنُ السَّمْعَ

3210. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें लैष़ ने ख़बर दी, उनसे इब्ने अबी जा'फ़र ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हहरा आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आपने फ़र्माया था कि फ़रिश्ते अ़नान मे उतरते हैं और अ़नान से मुराद बादल हैं। यहाँ फ़रिश्ते उन कामों का ज़िक्र करते हैं जिनका फ़ैसला आसमान में हो चुका होता है। और यहीं से शयातीन कुछ बातें चोरी छुपे उड़ा लेते हैं। फिर काहिनों को उसकी ख़बर कर देते

٣٢١٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي جَعْفَرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ الْمَلاَئِكَةَ تَنْزِلُ فِي الْعَنَانِ - وَهُوَ السَّحَابُ - فَتَذْكُرُ الأَمْرَ قُضِيَ فِي السَّمَاءِ، فَتَسْتَرِقُ الشَّيَاطِينُ السَّمْعَ

हैं और ये काहिन सौ झूठ अपनी तरफ़ से मिलाकर बयान करते हैं।
(दीगर मक़ाम : 3288, 5762, 6213, 7561)

فَتَسْمَعُهُ فَتُوحِيهِ إِلَى الْكُهَّانِ، فَيَكْذِبُونَ مَعَهَا مِائَةَ كَذْبَةٍ مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِهِمْ)).

[أطرافه في: ٣٢٨٨، ٥٧٦٢، ٦٢١٣،

हैं और ये काहिन सौ झूठ अपनी तरफ़ से मिलाकर बयान करते हैं। (दीगर मक़ाम : 3288, 5762, 6213, 7561)

فَتَسْمَعُهُ فَتُوحِيهِ إِلَى الْكُهَّانِ، فَيَكْذِبُونَ مَعَهَا مِائَةَ كَذِبَةٍ مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِهِمْ)).
[أطرافه في: ٣٢٨٨، ٥٧٦٢، ٦٢١٣، ٧٥٦١].

3211. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अबू सलमा और अग़र ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब जुमा का दिन आता है तो मस्जिद के हर दरवाज़े पर फ़रिश्ते खड़े हो जाते हैं और सबसे पहले आने वाले और फिर उसके बाद आने वालों को नम्बर वार लिखते जाते हैं। फिर जब इमाम (ख़ुत्बे के लिये मिम्बर पर) बैठ जाता है तो ये फ़रिश्ते अपने रजिस्टर बन्द कर लेते हैंऔर ज़िक्र सुनने लग जाते हैं (ये ह़दीष़ किताबुल जुम्आ में मज़्कूर हो चुकी है यहाँ फ़रिश्तों का वजूद ष़ाबित करना मक़्सूद है)। (राजेअ़ : 929)

٣٢١١- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ وَالأَغَرِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((إِذَا كَانَ يَوْمُ الْجُمُعَةِ كَانَ عَلَى كُلِّ بَابٍ مِنْ أَبْوَابِ الْمَسْجِدِ الْمَلاَئِكَةُ يَكْتُبُونَ الأَوَّلَ فَالأَوَّلَ، فَإِذَا جَلَسَ الإِمَامُ طَوَوا الصُّحُفَ وَجَاؤُوا يَسْتَمِعُونَ الذِّكْرَ)). [راجع: ٩٢٩]

3212. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुह्री ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया कि उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो ह़स्सान (रज़ि.) शे'र पढ़ रहे थे। उन्होंने मस्जिद में शे'र पढ़ने पर नापसन्दीदगी फ़र्माई तो ह़स्सान (रज़ि.) ने कहा कि मैं उस वक़्त यहाँ शे'र पढ़ा करता था जब आपसे बेहतर शख़्स (आँह़ज़रत ﷺ) यहाँ तशरीफ़ रखते थे। फिर ह़ज़रत ह़स्सान (रज़ि.) ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की तरफ़ मुतवज्जह हुए और कहा कि मैं तुमसे अल्लाह का वास्ता देकर पूछता हूँ क्या रसूलल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते तुमने नहीं सुना था कि ऐ ह़स्सान! (कुफ़्फ़ारे मक्का को) मेरी तरफ़ से जवाब दे। ऐ अल्लाह! रूहुल क़ुदस के ज़रिये ह़स्सान की मदद कर। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि हाँ बेशक (मैंने सुना था)। (राजेअ़ : 453)

٣٢١٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ قَالَ: ((مَرَّ عُمَرُ فِي الْمَسْجِدِ وَحَسَّانُ يُنْشِدُ فَقَالَ: كُنْتُ أُنْشِدُ فِيْهِ وَفِيْهِ مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِنْكَ. ثُمَّ الْتَفَتَ إِلَى أَبِي هُرَيْرَةَ فَقَالَ: أَنْشُدُكَ بِاللهِ أَسَمِعْتَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((أَجِبْ عَنِّي، اللَّهُمَّ أَيِّدْهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ؟)) قَالَ : نَعَمْ)).
[راجع: ٤٥٣]

इससे ह़म्दो—नअ़त के अश्आर पढ़ने और कहने का जवाज़ ष़ाबित हुआ।

3213. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़दी बिन ष़ाबित ने और उनसे बराअ बिन

٣٢١٣- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ عَنِ الْبَرَاءِ

हमसे शैबान ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि अल्लाह के रास्ते में जो शख़्स किसी चीज़ का भी जोड़ा दे, तो जन्नत के चौकीदार फ़रिश्ते उसे बुलाएँगे कि ऐ फ़लाँ इस दरवाज़े से अंदर आ जा। अबूबक्र (रज़ि.) ने इस पर कहा कि ये तो वो शख़्स होगा जिसे कोई नुक़्सान न होगा। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे उम्मीद है कि तू भी उन्हीं में से होगा। (राजेअ : 1897)

قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ أَنْفَقَ زَوْجَيْنِ فِي سَبِيلِ اللهِ دَعَتْهُ خَزَنَةُ الْجَنَّةِ: أَيْ فُلُ هَلُمَّ)). فَقَالَ أَبُوبَكْرٍ ذَاكَ الَّذِي لاَ تَوَى عَلَيْهِ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَرْجُو أَنْ تَكُونَ مِنْهُمْ)). [راجع: ١٨٩٧]

अल्लाह की राह में जो चीज़ भी ख़र्च की जाए वो जोड़े की शक्ल में ज़्यादा बेहतर है जैसे कपड़ों के दो जोड़े या दो रुपये या दो क़ुर्आन शरीफ़ वग़ैरह वग़ैरह। ये बेहतरीन स़दक़ा होगा। यहाँ फ़रिश्तों का अहले जन्नत को बुलाना उनका वजूद और उनका हम कलाम होना षाबित करना मक़्सूद है।

3217. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें अबू सलमा ने और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक मर्तबा फ़र्माया, ऐ आइशा! ये जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) आए हैं, तुमको सलाम कह रहे हैं। आइशा (रज़ि.) ने जवाब में कहा, व अलैहिस्सलाम व रहमतुल्लाहि बरकातुहू। आप वो चीज़ें देखते हैं जिन्हे मैं नहीं देख सकती, आइशा (रज़ि.) की मुराद नबी करीम (ﷺ) से थी। (दीगर मक़ाम : 3768, 6201, 6249, 6153)

٣٢١٧- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنِ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامُ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لَهَا: ((يَا عَائِشَةُ، هَذَا جِبْرِيْلُ يَقْرَأُ عَلَيْكِ السَّلاَمَ))، فَقَالَتْ وَعَلَيْهِ السَّلاَمُ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ تَرَى مَا لاَ أَرَى. تُرِيْدُ النَّبِيَّ ﷺ)).

[أطرافه في: ٣٧٦٨، ٦٢٠١، ٦٢٤٩، ٦١٥٣].

3218. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे उमर बिन ज़र्र ने बयान किया, (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि मुझसे यह्या बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ ने बयान किया, उनसे उमर बिन ज़र्र ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने हज़रत जिब्रईल (अलै.) से एक मर्तबा फ़र्माया, हमसे मुलाक़ात के लिये जितनी मर्तबा आप आते हैं उससे ज़्यादा क्यूँ नहीं आते? बयान किया कि उस पर ये आयत नाज़िल हुई, और हम नहीं उतरते लेकिन तेरे रब के हुक्म से, उसी का है जो कुछ कि हमारे सामने है और जो कुछ हमारे पीछे है, आख़िर आयत तक। (दीगर मक़ाम : 4731, 7455)

٣٢١٨- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ ذَرٍّ. ح. قَالَ: وَحَدَّثَنِي يَحيَى بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا وَكِيْعٌ عَنْ عُمَرَ بْنِ ذَرٍّ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لِجِبْرِيْلَ: ((أَلاَ تَزُورُنَا أَكْثَرَ مِمَّا تَزُورُنَا؟ قَالَ: فَنَزَلَتْ: ﴿وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلاَّ بِأَمْرِ رَبِّكَ، لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِيْنَا وَمَا خَلْفَنَا﴾)) [مريم: ٦٤]. [طرفاه في: ٤٧٣١،

कि हमसे इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) न बयान किया था आँहज़रत (ﷺ) हज़रत जिब्राइल (अलैहिस्सलाम) को (अपनी अस़ली सूरत में) देखा, तो उनके छः सौ बाज़ू थे। (दीगर मक़ाम : 4856, 4857)

قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ مَسْعُودٍ أَنَّهُ رَأَى جِبْرِيلَ لَهُ سِتُّمِائَةِ جَنَاحٍ.

[طرفاه في: ٤٨٥٦، ٤٨٥٧].

3233. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अल्क़मा ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने (अल्लाह तआ़ला के इर्शाद) लक़द रआ मन आयाति रब्बिहिल कुब्रा के बारे में बतलाया कि आँहज़रत (ﷺ) ने एक सब्ज़ रंग का बिछौना देखा था जो आसमान में सारे किनारों को घेरे हुए था। (दीगर मक़ाम : 4858)

٣٢٣٣- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ﴿لَقَدْ رَأَى مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَى﴾ قَالَ: ((رَأَى رَفْرَفًا أَخْضَرَ سَدَّ أُفُقَ السَّمَاءِ)).

[طرفه في: ٤٨٥٨].

इस पर ह़ज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) बैठे हुए थे या उनके पर थे।

3234. हमसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी ने बयान किया, उनसे इब्ने औ़न ने, कहा हमको क़ासिम ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जिसने गुमान किया कि ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) ने अपने रब को देखा था तो उसने बड़ी झूठी बात ज़ुबान से निकाली, लेकिन आप (ﷺ) ने जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) को (मेअ़राज की रात में) उनकी अस़ल सूरत में देखा था। उनके वजूद आसमान का किनारा ढांप लिया था। (दीगर मक़ाम : 3235, 4612, 4855, 7380, 7531)

٣٢٣٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيُّ عَنِ ابْنِ عَوْنٍ قَالَ أَنْبَأَنَا الْقَاسِمُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((مَنْ زَعَمَ أَنَّ مُحَمَّدًا رَأَى رَبَّهُ فَقَدْ أَعْظَمَ، وَلَكِنْ قَدْ رَأَى جِبْرِيلَ فِي صُورَتِهِ وَخَلْقِهِ سَادًّا مَا بَيْنَ الأُفُقِ)).

[أطرافه في : ٣٢٣٥، ٤٦١٢، ٤٨٥٥، ٧٣٨٠، ٧٥٣١].

3235. मुझसे मुह़म्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे ज़करिया बिन अबी ज़ाइदा ने बयान किया, उनसे सई़द बिन अल अश्वअ़ ने, उनसे शअ़बी ने और उनसे मसरूक़ ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से पूछा (उनके उस कहने पर कि आँहज़रत (ﷺ) ने अल्लाह तआ़ला को देखा नहीं था) फिर अल्लाह तआ़ला के उस इर्शाद (षुम्मा दना फ़तदल्ला फ़कान क़ाब कौसेनि औ अदना) के बारे में आपका क्या ख़याल है? उन्होंने कहा कि ये आयत तो जिब्रईल (अलै.) के बारे में है, वो इंसानी शक्ल मे आँहज़रत (ﷺ) के पास आया करते थे और इस मर्तबा अपनी इस शक्ल में

٣٢٣٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ بْنُ أَبِي زَائِدَةَ عَنِ ابْنِ الأَشْوَعِ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ: ((قُلْتُ لِعَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: فَأَيْنَ قَوْلُهُ: ﴿ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّى، فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَى﴾؟ قَالَتْ: ذَاكَ جِبْرِيلُ كَانَ يَأْتِيهِ فِي صُورَةِ الرَّجُلِ، وَإِنَّمَا أَتَاهُ هَذِهِ الْمَرَّةَ فِي صُورَتِهِ

आए थे जो असली थी और उन्होंने ने तमाम आसमान के किनारों को ढांप लिया था। (राजेअ : 3234)

الَّتِيْ هِيَ صُوْرَتُهُ، فَسَدَّ الأُفُقَ)).
[راجع: ٣٢٣٤]

तश्रीह : शबे मेअ़राज में आँहज़रत (ﷺ) ने अल्लाह को देखा था या नहीं, उस बारे में उ़लमा में इख़्तिलाफ़ है। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) का ख़्याल यही है कि आपने अल्लाह पाक को नहीं देखा। बहरहाल आयते मज़्कूरा के बारे में ह़ज़रत आयशा (रज़ि.) ने उन लोगों का रद्द किया जो उससे आपका दीदारे इलाही षाबित करते हैं। फ़र्माया कि आयत में जिसकी क़ुर्बत का ज़िक्र है। इससे ह़ज़रत ज़िब्रईल (अलैहिस्सलाम) मुराद हैं।

व क़ालन्नववी अर्राजिह अल्मुख़्तार इन्द अक्षरिल्उ़लमाइ अन्नहू रअहू बि बस्रिही वल्लाहु आ़लम वत्तवक़्क़ुफ़ फ़ीहा लिअ़दमिद्दलाइलिल्वाज़िहति अ़ला अहदिल्जानिबैनि खैर या'नी इमाम नववी (रह.) ने कहा कि अक्षर उ़लमा के नज़दीक यही राजेह़ है कि आप (ﷺ) ने अपनी आँखों से अल्लाह तआ़ला को देखा चूँकि किसी ख़्याल की ताईद में वाज़ेह़ दलाइल नहीं हैं, इसलिये इस मसले में ख़ामोश रहना बेहतर है।

3236. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे अबू रजाअ ने बयान किया, उनसे समुरह़ बिन जुन्दब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैंने आज रात (ख़्वाब में) देखा कि दो शख़्स मेरे पास आए। उन दोनों ने मुझे बताया कि वो जो आग जला रहा है। वो जहन्नम का दारोग़ा मालिक नामी फ़रिश्ता है। मैं जिब्रईल (अलै.) हूँ और ये मीकाइल हैं। (राजेअ़ : 845)

٣٢٣٦- حَدَّثَنَا مُوسَى قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيْرٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو رَجَاءٍ عَنْ سَمُرَةَ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((رَأَيْتُ اللَّيْلَةَ رَجُلَيْنِ أَتَيَانِيْ قَالاَ : الَّذِيْ يُوقِدُ النَّارَ مَالِكٌ خَازِنُ النَّارِ، وَأَنَا جِبْرِيْلُ، وَهَذَا مِيْكَائِيْلُ)).
[راجع:٨٤٥]

ये एक त़वील ह़दीष़ का टुकड़ा है जो पारा नम्बर छः में गुज़र चुकी है। यहाँ उससे फ़रिश्तों का वजूद षाबित करना मक़्सूद है।

3237. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू ह़ाज़िम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर किसी मर्द ने अपनी बीवी को अपने बिस्तर पर बुलाया, लेकिन उसने आने से इंकार कर दिया और मर्द उस पर ग़ुस्सा होकर सो गया, तो सुबह तक फ़रिश्ते उस औरत पर ला'नत करते रहते हैं। इस रिवायत की मुताबअ़त, अबू ह़म्ज़ा, इब्ने दाऊद और अबू मुआ़विया ने आ'मश के वास्ते से की है। (दीगर मक़ाम : 5193, 5194)

٣٢٣٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا قَالَ أَبُو عَوَانَةَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا دَعَا الرَّجُلُ امْرَأَتَهُ إِلَى فِرَاشِهِ فَأَبَتْ، فَبَاتَ غَضْبَانَ عَلَيْهَا، لَعَنَتْهَا الْمَلاَئِكَةُ حَتَّى تُصْبِحَ)). تَابَعَهُ شُعْبَةُ وَأَبُو حَمْزَةَ وَابْنُ دَاوُدَ وَأَبُو مُعَاوِيَةَ عَنِ الأَعْمَشِ. [طرفاه في : ٥١٩٣، ٥١٩٤].

तश्रीह : अबू अ़वाना के साथ इस ह़दीष़ को शुअ़बा और अबू ह़म्ज़ा और अ़ब्दुल्लाह बिन दाऊद और अबू मुआ़विया ने भी आ'मश से रिवायत किया है। शुअ़बा की रिवायत ख़ुद मुअल्लिफ़ ने किताबुन्निकाह़ में वस्ल की है और अबू ह़म्ज़ा की रिवायत मौसूलन नहीं मिली और इब्ने दाऊद की रिवायत मुसद्दद ने अपनी बड़ी मुस्नद में वस्ल की और अबू मुआ़विया की रिवायत इमाम मुस्लिम और निसाई ने मौसूलन निकाली है।

इस ह़दीष़ को यहाँ लाने से फ़रिश्तों का वजूद षाबित करना मक़्सूद है कि वो ऐसी नाफ़र्मान औरत पर अल्लाह के हुक्म से रात भर ला'नत भेजते रहते हैं। इससे ये भी षाबित होता कि मर्द की इत़ाअ़त औरत के लिये कितनी ज़रूरी है। मर्द की ख़्वाहिश

किया, उनसे यह्या ने, उनसे अबू सलमा ने और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क्यूँ न मैं तुम्हें दज्जाल के बारे में एक ऐसी बात बता दूँ जो किसी नबी ने अपनी क़ौम को नहीं बताई। वो काना होगा और जन्नत और जहन्नम जैसी चीज़ लाएगा। पस जिसे वो जन्नत कहेगा दरह क़ीक़त वही जहन्नम होगी और मैं तुम्हें उसके फ़ित्ने से इसी त़रह डराता हूँ, जैसे नूह़ (अलै.) ने अपनी क़ौम को डराया था। (राजेअ़ : 3057)

يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَلاَ أُحَدِّثُكُمْ حَدِيثًا عَنِ الدَّجَّالِ مَا حَدَّثَ بِهِ نَبِيٌّ قَوْمَهُ: إِنَّهُ أَعْوَرُ، وَإِنَّهُ يَجِيءُ مَعَهُ بِمِثَالِ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ، فَالَّتِي يَقُولُ إِنَّهَا الْجَنَّةُ هِيَ النَّارُ، وَإِنِّي أُنْذِرُكُمْ كَمَا أَنْذَرَ بِهِ نُوحٌ قَوْمَهُ)). [راجع: ٣٠٥٧]

तश्रीह : अल्लाह पाक अपने बन्दों को आज़माने के लिये दज्जाल को पहले कुछ कामों की त़ाक़त दे देगा फिर बाद में उसकी आजिज़ी ज़ाहिर कर देगा, ऐसी सूरत ख़ुद बता देगी कि वो अल्लाह नहीं है। अह़ादीष़ में नूह़ (अलै.) का ज़िक्र आया है बाब से यही मुनासबत है।

3339. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, हमसे अ़ब्दुल वाह़िद बिन ज़ियाद ने बयान किया, हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अबू स़ालेह़ ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (क़यामत के दिन) नूह़ (अलै.) बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर होंगे। अल्लाह तआला दरयाफ़्त करेगा, क्या (मेरा पैग़ाम) तुमने पहुँचा दिया था? नूह़ (अलै.) अ़र्ज़ करेंगे मैंने तेरा पैग़ाम पहुँचा दिया था, ऐ रब्बुल इ़ज़्ज़त! अब अल्लाह तआला उनकी उम्मत से पूछेगा, क्या (नूह़ अलै. ने) ने तुम तक मेरा पैग़ाम पहुँचा दिया था? वो जवाब देंगे नहीं, हमारे पास तेरा कोई नबी नहीं आया। इस पर अल्लाह तआला नूह़ (अलै.) से पूछेगा, इसके लिये आपकी त़रफ़ से कोई गवाही भी दे सकता है? वो अ़र्ज़ करेंगे कि मुह़म्मद (ﷺ) और उनकी उम्मत (के लोग मेरे गवाह हैं) चुनाँचे हम उस बात की शहादत देंगे कि नूह़ (अलै.) ने पैग़ामे अल्लाह अपनी क़ौम तक पहुँचा दिया था और यही मफ़्हूम अल्लाह जल्ला ज़िक्रुहू के इस इर्शाद का है कि, और इसी त़रह हमने तुम्हें उम्मते वस्त़ बनाया, ताकि तुम लोगों पर गवाही दो और वस्त़ के मा'नी दरम्यानी के हैं। (दीगर मक़ाम : 4487, 7349)

٣٣٣٩- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنِ زِيَادٍ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((يَجِيْءُ نُوحٌ وَأُمَّتُهُ. فَيَقُولُ اللهُ تَعَالَى : هَلْ بَلَّغْتَ؟ فَيَقُولُ: نَعَمْ أَيْ رَبِّ. فَيَقُولُ لأُمَّتِهِ : هَلْ بَلَّغَكُمْ؟ فَيَقُولُونَ : لاَ، مَا جَاءَنَا مِنْ نَبِيٍّ. فَيَقُولُ لِنُوحٍ مَنْ يَشْهَدُ لَكَ؟ فَيَقُولُ: مُحَمَّدٌ ﷺ وَأُمَّتُهُ، فَنَشْهَدُ أَنَّهُ قَدْ بَلَّغَ، وَهُوَ قَوْلُهُ جَلَّ ذِكْرُهُ: ﴿وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ﴾ [البقرة: ١٤٣] وَالْوَسَطُ الْعَدْلُ.

[طرفاه في : ٤٤٨٧، ٧٣٤٩].

3340. मुझसे इस्ह़ाक़ बिन नस़र ने बयान किया, हमसे मुह़म्मद बिन उ़बैद ने बयान किया, हमसे अबू ह़य्यान यह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे अबू ज़रआ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.)

٣٣٤٠- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ حَدَّثَنَا أَبُو حَيَّانَ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ:

3369. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मालिक बिन अनस ने ख़बर दी। उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन अबीबक्र बिन मुहम्मद बिन अ़म्र बिन ह़ज़म ने, उन्हें उनके वालिद ने, उन्हें अ़म्र बिन सुलैम ज़रक़ी ने, उन्होंने कहा मुझको अबू हुमैद साएदी (रज़ि.) ने ख़बर दी कि सहाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम आप पर किस त़रह दरूद भेजा करें? तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि यूँ कहा करो ऐ अल्लाह! रहमत नाज़िल फ़र्मा मुहम्मद पर और उनकी बीवियों पर और उनकी औलाद पर जैसा कि तू ने रहमत नाज़िल फ़र्माई आले इब्राहीम पर और अपनी बरकत नाज़िल फ़र्मा मुहम्मद पर और उनकी बीवियों और औलाद पर जैसा कि तूने बरकत नाज़िल फ़र्माई आले इब्राहीम पर। बेशक तो इंतिहाई ख़ूबियों वाला और अ़ज़्मत वाला है। (दीगर मक़ाम : 6360)

٣٣٦٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بَكْرِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَزْمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَمْرُو بْنُ سُلَيْمٍ الزُّرَقِيِّ أَخْبَرَنِي أَبُو حُمَيْدٍ السَّاعِدِيُّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّهُمْ قَالُوا: ((يَا رَسُولَ اللهِ كَيْفَ نُصَلِّي عَلَيْكَ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: قُولُوا: اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَأَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ، وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَأَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ: إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ)). [طرفه في : ٦٣٦٠].

आल से मुराद वो लोग हैं जिन पर ज़कात ह़राम है। आपके अहले बैत या'नी ह़ज़रत अ़ली और ह़ज़रत फ़ातिमा और ह़ज़रत ह़सन व हुसैन (रज़ि.) हैं। दरूद से मुराद ये है कि आपकी नस्ल बरकत के साथ दुनिया में हमेशा बाक़ी रहे।

3370. हमसे क़ैस बिन ह़फ़्स़ और मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अ़ब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू क़ुर्रह मुस्लिम बिन सालिम हम्दानी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन ईसा ने बयान किया, उन्होंने अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी लैला से सुना, उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा कअ़ब बिन उ़ज्रह (रज़ि.) से मेरी मुलाक़ात हुई तो उन्होंने कहा क्यूँ न मैं तुम्हें (ह़दीष़ का) एक तोह़फ़ा पहुँचा दूँ जो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना था। मैंने अ़र्ज़ किया जी हाँ मुझे ये तोह़फ़ा ज़रूर इनायत फ़र्माइये। उन्होंने बयान किया कि हमने आँह़ज़रत (ﷺ) से पूछा था या रसूलल्लाह (ﷺ) हम आप पर और आपके अहले बैत पर किस त़रह दरूद भेजा करें? अल्लाह तआ़ला ने सलाम भेजने का त़रीक़ा तो हमें ख़ुद ही सिखा दिया है। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि यूँ कहा करो, ऐ अल्लाह! अपनी रहमत नाज़िल फ़र्मा मुहम्मद (ﷺ) पर और आले मुहम्मद (ﷺ) पर जैसा कि तूने अपनी रहमत नाज़िल फ़र्माई इब्राहीम पर और आले इब्राहीम (ﷺ) पर। बेशक तू बड़ी ख़ूबियों वाला और बुज़ुर्गी वाला है। ऐ अल्लाह! बरकत नाज़िल फ़र्मा मुहम्मद पर और

٣٣٧٠- حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ حَفْصٍ وَمُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالاَ : حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنِ زِيَادٍ حَدَّثَنَا أَبُو قُرَّةَ مُسْلِمُ بْنُ سَالِمٍ الْهَمْدَانِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ عِيسَى سَمِعَ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ أَبِي لَيْلَى قَالَ: لَقِيَنِي كَعْبُ بْنُ عُجْرَةَ فَقَالَ: أَلاَ أُهْدِي لَكَ هَدِيَّةً سَمِعْتُهَا مِنَ النَّبِيِّ ﷺ؟ فَقُلْتُ: بَلَى فَأَهْدِهَا لِي، فَقَالَ: سَأَلْنَا رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللهِ كَيْفَ الصَّلاَةُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ، فَإِنَّ اللهَ قَدْ عَلَّمَنَا كَيْفَ نُسَلِّمُ. قَالَ : ((قُولُوا اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ

आले मुहम्मद पर जैसा कि तू ने बरकत नाज़िल फ़र्माई इब्राहीम पर और आले इब्राहीम पर। बेशक तू बड़ी ख़ूबियों वाला और बड़ी अ़ज़्मत वाला है। (दीगर मक़ाम : 4797, 6357)

إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ، اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ)).

[طرفاه في : ٤٧٩٧، ٦٣٥٧].

तश्रीह : अहले बैत या'नी ह़ज़रत अ़ली और ह़ज़रत फ़ातिमा और ह़स्नैन मुराद हैं।

3371. हमसे उ़ष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे मिन्हाल ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ह़ज़रत ह़सन व ह़ुसैन (रज़ि.) के लिये पनाह त़लब किया करते थे और फ़र्माते थे कि तुम्हारे बुज़ुर्ग दादा (इब्राहीम अलै.) भी उन कलिमात के ज़रिये अल्लाह की पनाह इस्माईल और इस्ह़ाक़ (अलै.) के लिये मांगा करते थे, मैं पनाह मांगता हूँ अल्लाह के पूरे पूरे कलिमात के ज़रिये हर एक शैत़ान से और हर ज़हरीले जानवर से और हर नुक़्सान पहुँचाने वाली नज़रे बद से।

٣٣٧١- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنِ الْمِنْهَالِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُعَوِّذُ الْحَسَنَ وَالْحُسَيْنَ وَيَقُولُ: إِنَّ أَبَاكُمَا كَانَ يُعَوِّذُ بِهَا إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ: أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّةِ، مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَهَامَّةٍ، وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لاَمَّةٍ)).

तश्रीह : मुज्तहिदे मुत़्लक़ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने यहाँ तक जिस क़दर अह़ादीष़ इस बाब के तह़त में बयान की हैं उन सब में किसी न किसी पहलू से ह़ज़रत इब्राहीम और आले इब्राहीम का ज़िक्र मौजूद है और बाब और अह़ादीष़ में यही वजहे मुनासबत है। ज़िम्नी त़ौर पर अह़ादीष़ में और भी बहुत से मसाइल का ज़िक्र आ गया है जो तदबीर करने से मा'लूम किये जा सकते हैं। दरूद से मुराद दीन व दुनिया की वो बरकतें जो अल्लाह पाक ने ह़ज़रत इब्राहीम (अलै.) और उनकी औलाद को अ़त़ा फ़र्माई कि आज भी बेशतर अक़्वामे आ़लम का नस्ली ता'ल्लुक़ ह़ज़रत इब्राहीम (अलै.) से मिलता है और बिला शक अल्लाह पाक ने यही बरकात ह़ज़रत सय्यदना मुह़म्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) को अ़त़ा की हैं कि आपका कलिमा पढ़ने वाले आज रूए ज़मीन पर करोड़ों-करोड़ की ता'दाद में मौजूद हैं और रोज़ाना पंजवक़्ता फ़िज़ाए आसमानी में आपकी रिसालते ह़क़्क़ा का ऐलान इस शान से किया जाता है कि दुनिया के तमाम पेशवायाने मज़हब में नज़ीर नामुम्किन है। अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिंव्व अ़ला आलि मुहम्मद व बारिक व सल्लिम आमीन

बाब 11 : अल्लाह तआ़ला ने सूरह ह़िज्र में फ़र्माया, ऐ नबी! उन लोगों को इब्राहीम (अलै.) के मेहमानों का क़िस्स़ा सुनाइये

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह बक़र: में फ़र्माया, ऐ मेरे रब! मुझे दिखा कि तू मुर्दों को ज़िन्दा किस त़रह करेगा लेकिन ये स़िर्फ़ मैं इसलिये चाहता हूँ कि मेरे दिल को और ज़्यादा इत्मीनान हो जाए तक।

١١- بَابُ قَوْلِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ﴾ الآيَةَ [الحجر: ٥١] ﴿وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ: رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَى﴾ إِلَى قَوْلِهِ : ﴿وَلَكِنْ لِيَطْمَئِنَّ قَلْبِي﴾ الآيَةَ [البقرة : ٢٦٠]

ने और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ह़ज़रत दाऊद (अलै.) के लिये क़ुर्आन (या'नी ज़बूर) की क़िरअत बहुत आसान कर दी गई थी। चुनाँचे वो अपनी सवारी पर ज़ीन कसने का हुक्म देते और ज़ीन कसी जाने से पहले ही पूरी ज़बूर पढ़ लेते थे और आप सिर्फ़ अपने हाथों की कमाई खाते थे। उसकी रिवायत मूसा बिन उ़क़्बा ने की, उनसे स़फ़्वान ने, उनसे अ़ता बिन यसार ने, उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है। (राजेअ़ : 2073)

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((خُفِفَ عَلَى دَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ الْقُرْآنُ، فَكَانَ يَأْمُرُ بِدَوَابِّهِ فَتُسْرَجُ، فَيَقْرَأُ الْقُرْآنَ قَبْلَ أَنْ تُسْرَجَ دَوَابُّهُ، وَلاَ يَأْكُلُ إِلاَّ مِنْ عَمَلِ يَدِهِ)) رَوَاهُ مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ صَفْوَانَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[راجع: ٢٠٧٣]

तश्रीह : इस क़दर जल्द ज़बूर पढ़ लेना ह़ज़रत दाऊद (अलै.) का एक मुअजिज़ा था। लेकिन अब आ़म मुसलमानों के लिये क़ुर्आन का ख़त्म तीन दिन से पहले करना सुन्नत के ख़िलाफ़ है। जिसने क़ुर्आन पाक तीन दिन से पहले और तीन से कम में ख़त्म किया उसने क़ुर्आन फ़हमी का ह़क़ अदा नहीं किया। ह़ज़रत दाऊद (अलै.) अपने सब भाइयों में पस्त क़द थे इसलिये लोग उनको ह़िक़ारत की नज़र से देखते थे। लेकिन अल्लाह पाक ने ह़ज़रत दाऊद (अलै.) को उनके भाइयों पर फ़ज़ीलत दी और उन पर ज़बूर नाज़िल फ़र्माई। इस त़रह़ इंजील का फ़िक़रा स़ह़ीह़ हुआ कि जिस पत्थर को मेअमारों ने ख़राब देखकर फेंक दिया था, वही मह़ल के कोने का स़दरे नशीन हुआ। ह़ज़रत दाऊद (अलै.) को अल्लाह तआ़ला ने लोहे का काम बत़ौरे मुअजज़ा अ़ता फ़र्माया कि लोहा उनके हाथ में मोम हो जाता और वो उनसे ज़िरहें और मुख़्तलिफ़ सामान बनाते। यही उनका ज़रिया-ए-मआश था। ह़दीष़ शरीफ़ में उनके रोज़े की भी ता'रीफ़ की गई है और क़ुर्आन मजीद में उनकी इ़बादत व रियाज़त और इनाबत इलल्लाह को बड़े अच्छे अंदाज़ में बयान किया गया है।

3418. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को ख़बर मिली कि मैंने कहा है कि अल्लाह की क़सम! जब तक मैं ज़िन्दा रहूँगा, दिन में रोज़े रखूँगा और रात भर इबादत किया करूँगा । रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे पूछा कि क्या तुम्हीं ने ये कहा है कि अल्लाह की क़सम जब तक ज़िन्दा रहूँगा दिन भर रोज़े रखूँगा और रात भर इबादत करूँगा? मैंने अ़र्ज़ किया जी हाँ मैंने ये जुम्ला कहा है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम उसे निभा नहीं सकोगे, इसलिये रोज़ा भी रखा करो और बग़ैर रोज़े के भी रहा करो और रात मे इबादत भी किया करो और सोया भी करो। हर महीने में तीन दिन रोज़ा रखा करो, क्योंकि हर नेकी का बदला दस गुना मिलता है इस त़रह़ रोज़े का ये त़रीक़ा भी (ष़वाब के ए'तिबार से) ज़िन्दगी भर के रोज़े जैसा हो जाएगा। मैंने कहा कि मैं इससे अफ़ज़ल त़रीक़ा की त़ाक़त रखता हूँ, ऐ अल्लाह के रसूल

٣٤١٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ سَعِيْدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ أَخْبَرَهُ وَأَبَا سَلَمَةَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا قَالَ: أُخْبِرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنِّي أَقُولُ : وَاللهِ لأَصُومَنَّ النَّهَارَ وَلأَقُومَنَّ اللَّيْلَ مَا عِشْتُ، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَنْتَ الَّذِي تَقُولُ : وَاللهِ لأَصُومَنَّ النَّهَارَ وَلأَقُومَنَّ اللَّيْلَ مَا عِشْتُ؟)) قُلْتُ : قَدْ قُلْتُهُ. قَالَ : ((إِنَّكَ لاَ تَسْتَطِيْعُ ذَلِكَ، فَصُمْ وَأَفْطِرْ، وَقُمْ وَنَمْ، وَصُمْ مِنَ الشَّهْرِ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ فَإِنَّ الْحَسَنَةَ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا، وَذَلِكَ مِثْلُ صِيَامِ الدَّهْرِ)).

فَقُلْتُ: إِنِّي أُطِيْقُ أَفْضَلَ مِنْ ذَلِكَ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((فَصُمْ يَومًا وَأَفطِرْ يَومَيْنِ)). قَالَ: قُلْتُ : إِنِّي أُطِيْقُ أَفضَلَ مِنْ ذَلِكَ)). قَالَ : ((فَصُمْ يَومًا وَأَفْطِرْ يَومًا، وَذَلِكَ صِيَامُ دَاوُدَ وَهُوَ أَعْدَلُ الصِّيَامِ)). قُلْتُ : إِنِّي أُطِيْقُ أَفْضَلَ مِنْهُ يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: ((لاَ أَفْضَلَ مِنْ ذَلِكَ)).

[راجع: ١١٣١]

(ﷺ)! आपने उस पर फ़र्माया कि फिर एक दिन रोज़ा रखा करो और दो दिन बग़ैर रोज़े के रहा करो। उन्होंने बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया कि मैं इससे भी अफ़ज़ल त़रीक़े की त़ाक़त रखता हूँ। आपने फ़र्माया कि फिर एक दिन रोज़ा रखा करो और एक दिन बग़ैर रोज़ा के रहा करो, ह़ज़रत दाऊद (अलै.) के रोज़े का त़रीक़ा भी यही था और यही सबसे अफ़ज़ल त़रीक़ा है। मैंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं इससे भी अफ़ज़ल त़रीक़े की त़ाक़त रखता हूँ। आपने फ़र्माया कि उससे अफ़ज़ल और कोई त़रीक़ा नहीं। (राजेअ़ : 1131)

٣٤١٩- حَدَّثَنَا خَلاَّدُ بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا مِسْعَرٌ حَدَّثَنَا حَبِيْبُ بْنُ أَبِي ثَابِتٍ عَنْ أَبِي الْعَبَّاسِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَلَمْ أُنَبَّأْ أَنَّكَ تَقُومُ اللَّيْلَ وَتَصُومُ النَّهَارَ؟ فَقُلْتُ: نَعَمْ. فَقَالَ : فَإِنَّكَ إِذَا فَعَلْتَ هَجَمَتِ الْعَيْنُ، وَنَفِهَتِ النَّفْسُ، صُمْ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ، فَذَلِكَ صَومُ الدَّهْرِ، أَوْ كَصَومِ الدَّهْرِ. قُلْتُ : إِنِّي أَجِدُ بِي - قَالَ مِسْعَرٌ : يَعْنِي قُوَّةً - قَالَ : فَصُمْ صَومَ دَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ، وَكَانَ يَصُومُ يَومًا وَيُفطِرُ يَومًا، وَلاَ يَفِرُّ إِذَا لاَقَى)).

[راجع: ١١٣١]

3419. हमसे ख़ल्लाद बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे मिस्अर ने बयान किया, कहा हमसे ह़बीब बिन अबी ष़ाबित ने बयान किया, उनसे अबुल अ़ब्बास ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दरयाफ़्त फ़र्माया, क्या मेरी ये ख़बर स़ह़ीह़ है कि तुम रात भर इबादत करते हो और दिन भर (रोज़ाना) रोज़ा रखते हो? मैंने अ़र्ज़ किया कि जी हाँ। आपने फ़र्माया लेकिन अगर तुम इसी त़रह़ करते रहे तो तुम्हारी आँखें कमज़ोर हो जाएँगी और तुम्हारा जी उकता जाएगा। हर महीने मे तीन रोज़े रखा करो कि यही (ष़वाब के ए'तिबार से) ज़िन्दगी भर का रोज़ा है, या (आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि) ज़िन्दगी भर के रोज़े की त़रह़ है। मैंने अ़र्ज़ किया कि मैं अपने में मह़सूस करता हूँ, मिस्अर ने बयान किया कि आपकी मुराद क़ुव्वत से थी। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर ह़ज़रत दाऊद (अलै.) के रोज़े की त़रह़ रोज़े रखा करो। वो एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन बग़ैर रोज़े के रहा करते थे और अगर दुश्मन से मुक़ाबला करते तो मैदान से भागा नहीं करते थे। (राजेअ़ : 1131)

अह़ादीष़े मज़्कूरा में ह़ज़रत दाऊद (अलै.) का ज़िक्र है। बाब से यही वजहे मुत़ाबक़त है।

٣٨- بَابُ أَحَبُّ الصَّلاَةِ إِلَى اللهِ صَلاَةُ دَاوُدَ،

وَأَحَبُّ الصِّيَامِ إِلَى اللهِ صِيَامُ دَاوُدَ : كَانَ

बाब 38 : ह़ज़रत दाऊद (अलै.) का बयान

सूरह बनी इस्राईल में अल्लाह ने फ़र्माया कि उसकी बारगाह में सबसे पसन्दीदा नमाज़ दाऊद (अलै.) की नमाज़ है और सबसे

शख़्स) जन्नत के आठ दरवाज़ों में से जिससे चाहे (दाख़िल होगा)।

جَنادة وزاد من أبواب الجنة الثمانية أيها شاء.

बाब 48 : सूरह मरयम में अल्लाह तआला ने फ़र्माया (उस) किताब में मरयम का ज़िक्र कर जब वो अपने घरवालों से अलग होकर

٤٨- باب ﴿وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ مَرْيَمَ إِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ أَهْلِهَا﴾ [مريم : ١٦].

एक पूरब रुख़ मकान में चली गई। लफ़्ज़ अम्बज़त नबज़ा से निकला है जैसे हज़रत यूनुस के क़िस्से में फ़र्माया नबज़्नाहू या'नी मैंने उनको डाल दिया। शरक़िया पूरब रुख़ (या'नी मस्जिद से या उनके घर से पूरब की तरफ़) फ़ा जाउहा के मा'नी उसको लाचार और बेक़रार कर दिया। तसाक़त गिरेगा। क़ज़िया दूर। फ़रिया बड़ा या बुरा। नसिय्या नाचीज़। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने ऐसा ही कहा। दूसरों ने कहा नसी कहते हैं हक़ीर चीज़ को (ये सदी से मन्क़ूल है) अबू वाइल ने कहा कि मरयम ये समझी कि परहेज़गार वही होता है जो अक़्लमन्द होता है। जब उन्होंने कहा (जिब्रईल अलै. को एक जवान मर्द की शक्ल में देखकर) अगर तू परहेज़गार है अल्लाह से डरता है। वकीअ ने इस्राईल से नक़ल किया, उन्होंने अबू इस्हाक़ से, उन्होंने बराअ बिन आज़िब से सरिय्या सुरयानी ज़ुबान में छोटी नहर को कहते हैं।

فَنبذْناهُ: أَلْقَيْنَاهُ: اعْتَزَلَتْ شَرْقِيًّا: مِمَّا يَلِي الشَّرْق. ﴿فَأَجَاءَهَا﴾: أَفعلْتُ من جئتُ، وَيُقَالُ: أَلْجَأَهَا اضْطَرَّهَا، ﴿تَسَاقَطْ﴾: تَسْقُطْ. ﴿قَصِيًّا﴾: قَاصِيًا. ﴿فَرِيًّا﴾: عَظِيمًا. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿نَسِيًّا﴾: لَمْ أَكُنْ شَيْئًا. وَقَالَ غَيْرُهُ: النَّسِيُّ: الْحَقِيرِ. وَقَالَ أَبُو وَائِلٍ: عَلِمتْ مَرْيَمُ أَنَّ التَّقِيَّ ذُو نُهْيَةٍ حِينَ قَالَتْ: ﴿إِنْ كُنْتَ تَقِيًّا﴾. وَقَالَ وَكِيعٌ عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ: ﴿سَرِيًّا﴾ نَهْرٌ صَغِيرٌ بِالسُّرْيَانِيَّةِ.

3436. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया गोद में तीन बच्चों के सिवा और किसी ने बात नहीं की। अव्वल ईसा (अलै.) (दूसरे का वाक़िया ये है कि) बनी इस्राईल में एक बुज़ुर्ग थे, नाम जुरैज था। वो नमाज़ पढ़ रहे थे कि उनकी माँ ने उन्हें पुकारा। उन्होंने (अपने दिल में) कहा कि मैं वालिदा का जवाब दूँ या नमाज़ पढ़ता रहूँ? उस पर उनकी वालिदा ने (गुस्सा होकर) बद् दुआ की, ऐ अल्लाह! उस वक़्त तक उसे मौत न आए जब तक ये ज़ानिया औरतों का मुँह न देख ले। जुरैज अपने इबादतख़ाने में रहा करते थे। एक मर्तबा उनके सामने एक फ़ाहिशा औरत आई और उनसे बदकारी चाही लेकिन उन्होंने (उसकी ख़्वाहिश पूरी

٣٤٣٦- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((لَمْ يَتَكَلَّمْ فِي الْمَهْدِ إِلاَّ ثَلاَثَةٌ: عِيسَى. وَكَانَ فِي بَنِي إِسْرَائِيلَ رَجُلٌ يُقَالُ لَهُ جُرَيْجٌ كَانَ يُصَلِّي، جَاءَتْهُ أُمُّهُ فَدَعَتْهُ، فَقَالَ: أُجِيبُهَا أَوْ أُصَلِّي؟ فَقَالَتْ: اللَّهُمَّ لاَ تُمِتْهُ حَتَّى تُرِيَهُ وُجُوهَ الْمُومِسَاتِ، وَكَانَ جُرَيْجٌ فِي صَوْمَعَتِهِ، فَتَعَرَّضَتْ لَهُ امْرَأَةٌ وَكَلَّمَتْهُ فَأَبَى، فَأَتَتْ رَاعِيًا فَأَمْكَنَتْهُ مِنْ نَفْسِهَا،

عُقْبَةَ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ سُلَيْمٍ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ. [راجع: ٣٤٤٣]

उनसे स़फ़्वान बिन सुलैम ने, उनसे अ़त़ा बिन यसार ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया। (राजेअ़ : 3443)

अ़लाती भाई वो जिनका बाप एक हो, माँ जुदा जुदा हों। इसी त़रह़ तमाम अंबिया का दीन एक है और फ़ुरूई मसाइल जुदा जुदा हैं।

٣٤٤٤- وَحَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((رَأَى عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَجُلاً يَسْرِقُ، فَقَالَ لَهُ: أَسَرَقْتَ؟ قَالَ: كَلاَّ وَاللهِ الَّذِي لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ. فَقَالَ عِيْسَى: آمَنْتُ بِاللهِ، وَكَذَّبْتُ عَيْنِي)).

3444. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम ने और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ईसा इब्ने मरयम (अलै.) ने एक शख़्स़ को चोरी करते हुए देखा फिर उससे दरयाफ़्त फ़र्माया तूने चोरी की है? उसने कहा कि हर्गिज़ नहीं, उस ज़ात की क़सम! जिसके सिवा और कोई मा'बूद नहीं। ह़ज़रत ईसा (अलै.) ने फ़र्माया कि मैं अल्लाह पर ईमान लाया और मेरी आँखों को धोखा हुआ।

तश्रीह : या'नी मोमिन झूठी क़सम नहीं खा सकता जब उसने क़सम खा ली तो मा'लूम हुआ कि वो सच्चा है। आँख से ग़लती मुम्किन है मष़लन उसके जैसा कोई दूसरा शख़्स़ हो। या दरह़क़ीक़त उसका फ़ेअ़ल चोरी न हो। उस माल में उसका कोई ह़क़ मुतअ़य्यन हो। बहुत से एह़तिमाल हो सकते हैं। कुछ ने कहा ऐसा कहने से ह़ज़रत ईसा की मुराद ये थी कि मोमिन को मोमिन की क़सम पर ऐसा भरोसा होना चाहिये जैसे आँख से देखने पर बल्कि इससे ज़्यादा। कुछ ने ये कहा मत़लब ये था कि क़ाज़ी को अपने इल्म और मुशाहिदे पर हुक्म देना दुरुस्त नहीं जब तक बाक़ायदा जुर्म के लिये षुबूत मुहय्या न हो जाए। (वह़ीदी)

٣٤٤٥- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ يَقُولُ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ سَمِعَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ عَلَى الْمِنْبَرِ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لاَ تُطْرُونِي كَمَا أَطْرَتِ النَّصَارَى ابْنَ مَرْيَمَ، فَإِنَّمَا أَنَا عَبْدُهُ، فَقُولُوا: عَبْدُ اللهِ وَرَسُولُهُ)). [راجع: ٢٤٦٢]

3445. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा कि मैंने ज़ुह्री से सुना, वो बयान करते थे कि मुझे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उन्हें ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने, उन्होंने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को मिम्बर पर ये कहते सुना था कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया, मुझे मेरे मर्तबे से ज़्यादा न बढ़ाओ जैसे ईसा इब्ने मरयम (अलै.) को नस़ारा ने उनके मर्तबे से ज़्यादा बढ़ा दिया है। मैं तो स़िर्फ़ अल्लाह का बन्दा हूँ, इसलिये यही कहा करो (मेरे बारे में) कि मैं अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल हूँ। (राजेअ़ : 2462)

तश्रीह : अल्लाह का ग़ुलाम, अल्लाह के ह़बीब, अल्लाह के ख़लील, अशरफ़ुल अंबिया आपकी ता'रीफ़ की ह़द यही है। जब क़ुर्आन में आपको अल्लाह का बन्दा फ़र्माया ये आयत उतरी, **लम्मा क़ाम अब्दुल्लाहि** (अल जिन्न : 19) तो आप निहायत ही ख़ुश हुए अल्लाह की उ़बूदियते ख़ालिस़ा बहुत बड़ा मर्तबा है। ये जाहिल क्या जानें। उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) की नअ़त यही समझ रखी है कि आपको अल्लाह बना दें या अल्लाह से भी एक दर्जा आगे चढ़ा दें। **कबुरत कलिमतन तख़रूजु मिन अफ़्वाहिहिम.** (वहीदी)

बिन यूसुफ़ ने बयान किया अबू अ़ब्दुल्लाह से रिवायत है और उनसे क़ुबैस़ा ने बयान किया कि ये वो मुर्तदीन हैं जिन्होंने ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के अ़हदे ख़िलाफ़त में कुफ़्र इख़्तियार किया था, और जिनसे अबूबक्र (रज़ि.) ने जंग की थी। (राजेअ़ : 3349)

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمِ)). قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ الْفِرَبْرِيُّ: ذُكِرَ عِنْدَ أَبِي عَبْدِ اللهِ عَنْ قَبِيْصَةَ قَالَ: ((هُمُ الْمُرْتَدُّونَ الَّذِيْنَ ارْتَدُّوا عَلَى عَهْدِ أَبِي بَكْرٍ، فَقَاتَلَهُمْ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ)). [راجع: ٣٣٤٩]

और वो अहले बिद्अ़त भी धुत्कार दिये जाएँगे जिन्होंने क़िस्म क़िस्म की बिद्आ़त से इस्लाम को मस्ख़ कर डाला था जैसा कि दूसरी रिवायत में है कि उनको ह़ौज़े कौष़र से रोक दिया जाएगा। ख़ुद मा'लूम होने पर आँह़ज़रत (ﷺ) फ़र्माएँगे, सुह़क़न **लिमन ग़य्यर बअ़दी दीनन** उनके लिये दूरी हो जिन्होंने मेरे बाद मेरे दीन को बदल डाला। इन तमाम बयान की गई अह़ादीष़ में किसी न किसी त़रह़ से ह़ज़रत ईसा (अलै.) का ज़िक्र आया है। इसलिये उनको यहाँ लाया गया और यही बाब से वजहे मुनासबत है।

बाब 49 : ह़ज़रत ईसा बिन मरयम (अलै.) का आसमान से उतरना

٤٩ - بَابُ نُزُولِ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ عَلَيْهِمَا السَّلاَمُ

3448. हमसे इस्ह़ाक़ बिन राह्वै ने बयान किया, कहा हमको यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने ख़बर दी, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे स़ालेह़ बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने और उन्हों ने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, वो ज़माना क़रीब है कि ईसा बिन मरयम (अलै.) तुम्हारे दरम्यान एक आ़दिल ह़ाकिम की ह़ैष़ियत से नाज़िल होंगे। वो स़लीब को तोड़ देंगे, सुअर को मार डालेंगे और जिज़्या मौक़ूफ़ कर देंगे। उस वक़्त माल की इतनी क़ष़रत हो जाएगी कि कोई उसे लेने वाला नहीं मिलेगा। उस वक़्त का एक सज्दा दुनिया व मा फ़ीहा से बढ़कर होगा। फिर ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि अगर तुम्हारा जी चाहे तो ये आयत पढ़ लो, और कोई अहले किताब ऐसा नहीं होगा जो ईसा की मौत से पहले उस पर ईमान न लाए और क़यामत के दिन वो उन पर गवाह होंगे। (राजेअ़ : 2222)

٣٤٤٨- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ سَعِيْدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ : ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَيُوشِكَنَّ أَنْ يَنْزِلَ فِيْكُمْ ابْنُ مَرْيَمَ حَكَمًا عَدْلاً، فَيَكْسِرَ الصَّلِيْبَ، وَيَقْتُلَ الْخِنْزِيْرَ، وَيَضَعَ الْجِزْيَةَ، وَيَفِيْضَ الْمَالُ حَتَّى لاَ يَقْبَلَهُ أَحَدٌ، حَتَّى تَكُونَ السَّجْدَةُ الْوَاحِدَةُ خَيْرًا مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا)). ثُمَّ يَقُولُ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: وَاقْرَؤُوا إِنْ شِئْتُمْ ﴿وَإِنْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلاَّ لَيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ، وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا﴾. [راجع: ٢٢٢٢]

आयत का मत़लब ये हुआ कि क़यामत के क़रीब जो यहूद व नस़ारा होंगे और ह़ज़रत ईसा उनके ज़माने में नाज़िल होंगे तो उस ज़माने के अहले किताब उनके ऊपर ईमान ले आएँगे। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से ऐसा ही मन्क़ूल है।

3449. हमसे इब्ने बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे हज़रत अबू क़तादा अंसारी (रज़ि.) के गुलाम नाफ़ेअ ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हारा उस वक़्त क्या हाल होगा जब ईसा इब्ने मरयम तुममें उतरेंगे (तुम नमाज़ पढ़ रहे होगे) और तुम्हारा इमाम तुम ही में से होगा। इस रिवायत की मुताबअ़त अ़क़ील और औज़ाई ने की। (राजेअ़ : 2222)

٣٤٤٩- حَدَّثَنَا ابْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ نَافِعٍ مَوْلَى أَبِي قَتَادَةَ الأَنْصَارِيِّ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((كَيْفَ أَنْتُمْ إِذَا نَزَلَ ابْنُ مَرْيَمَ فِيكُمْ وَإِمَامُكُمْ مِنْكُمْ)) تَابَعَهُ عُقَيْلٌ وَالأَوْزَاعِيُّ. [راجع: ٢٢٢٢]

तश्रीह : आख़िर ज़माने में हज़रत ईसा बिन मरयम (अलै.) के आसमान से नाज़िल होने पर उम्मते इस्लामिया का इज्माअ़ है। आयते क़ुर्आनी **व इन्ना मिन अहलिल किताब** अल्ख़ इस अ़क़ीदा पर नस्से क़तई है और अहादीष़े सहीहा इस बारे में मौजूद हैं। उस आख़री ज़माने में चन्द नेचरिस्ट (प्रकृतिवादी) क़िस्म के लोगों ने इस अ़क़ीदे का इंकार किया और पंजाब के एक शख़्स मिर्ज़ा क़ादयानी ने इस इंकार को बहुत कुछ उछाला और तमाम मुसलमानाने सलफ़ व ख़लफ़ के ख़िलाफ़ उनकी मौत का झूठा अ़क़ीदा मशहूर किया, जो स़रीह़ बात़िल है। किसी भी रासिख़ुल ईमान मुसलमान को ऐसे बद अ़क़ीदा लोगों की हफ़्वात से मुताष़्षिर नहीं होना चाहिये।

बाब 50 : बनी इस्राईल के वाक़ियात का बयान

٥٠- بَابُ مَا ذُكِرَ عَنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ

3450. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल मलिक ने बयान किया, उनसे रबई बिन ह़िराश ने बयान किया कि हज़रत उ़क़्बा बिन अ़म्र (रज़ि.) ने हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) से कहा, क्या आप वो हदीष़ हमसे नहीं बयान करेंगे जो आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी थी? उन्होंने कहा कि मैंने आँहज़रत (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना था कि जब दज्जाल निकलेगा तो उसके साथ आग और पानी दोनों होंगे लेकिन लोगों को जो आग दिखाई देगी वो ठण्डा पानी होगा और लोगों को जो ठण्डा पानी दिखाई देगा तो वो जलाने वाली आग होगी। इसलिये तुममें से जो कोई उसके ज़माने में हो तो उसे उसमें गिरना चाहिये जो आग होगी क्योंकि वही इंतिहाई शीरीं और ठण्डा पानी होगा। (दीगर मक़ाम : 7130)

٣٤٥٠- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ عُمَيْرٍ عَنْ رِبْعِيِّ بْنِ حِرَاشٍ قَالَ: قَالَ عُقْبَةُ بْنُ عَمْرٍو لِحُذَيْفَةَ: أَلاَ تُحَدِّثُنَا مَا سَمِعْتَ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ؟ قَالَ: إِنِّي سَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((إِنَّ مَعَ الدَّجَّالِ إِذَا خَرَجَ مَاءً وَنَارًا، فَأَمَّا الَّذِي يَرَى النَّاسُ أَنَّهَا النَّارُ فَمَاءٌ بَارِدٌ. وَأَمَّا الَّذِي يَرَى النَّاسُ أَنَّهُ مَاءٌ بَارِدٌ فَنَارٌ تُحْرِقُ. فَمَنْ أَدْرَكَ مِنْكُمْ فَلْيَقَعْ فِي الَّذِي يَرَى أَنَّهَا نَارٌ، فَإِنَّهُ عَذْبٌ بَارِدٌ)). [طرفه في : ٧١٣٠].

3451. हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैंने आँहज़रत (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना था कि पहले ज़माने में एक शख़्स के पास मलकुल मौत उनकी रूह क़ब्ज़ करने आए तो उनसे पूछा गया कोई अपनी नेकी तुम्हें याद है? उन्होंने कहा कि मुझे तो याद नहीं पड़ती,

٣٤٥١- قَالَ حُذَيْفَةُ: ((وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: إِنَّ رَجُلاً كَانَ فِيمَنْ قَبْلَكُمْ أَتَاهُ الْمَلَكُ لِيَقْبِضَ رُوحَهُ، فَقِيلَ لَهُ : هَلْ عَمِلْتَ مِنْ

उनसे दोबारा कहा गया कि याद करो? उन्होंने कहा कि मुझे कोई अपनी नेकी याद नहीं, सिवा उसके कि मैं दुनिया में लोगों के साथ ख़रीद व फ़रोख़्त किया करता था और लेन-देन किया करता था, जो लोग ख़ुशहाल होते उन्हें तो मैं (अपना क़र्ज़ वसूल करते वक़्त) मुहलत दिया करता था और तंग हाथ वालों को मुआफ़ कर दिया कर था। अल्लाह तआला ने उन्हें उसी पर जन्नत में दाख़िल किया। (राजेअ : 2077)

خَيْرٍ؟ قَالَ: مَا أَعْلَمُ. قِيْلَ لَهُ : اُنْظُرْ. قَالَ : مَا أَعْلَمُ شَيْئًا، غَيْرَ أَنِّي كُنْتُ أُبَايِعُ النَّاسَ فِي الدُّنْيَا فَأُجَازِيْهِمْ، فَأُنْظِرُ الْمُوسِرَ وَأَتَجَاوَزُ عَنِ الْمُعْسِرِ، فَأَدْخَلَهُ اللهُ الْجَنَّةَ)). [راجع: ٢٠٧٧]

3452. और हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना कि एक शख़्स की मौत का जब वक़्त आ गया और वो अपनी ज़िन्दगी से बिलकुल मायूस हो गया तो उसने अपने घरवालों को वसिय्यत की कि जब मेरी मौत हो जाए तो मेरे लिये बहुत सारी लकड़ियाँ जमा करना और उनमें आग लगा देना। जब आग मेरे गोश्त को जला चुके और आख़िर हड्डी को भी जला दे तो उन जली हुई हड्डियों को पीस डालना और किसी तेज़ हवा वाले दिन का इंतिज़ार करना और (ऐसे किसी दिन) मेरी राख को दरिया में बहा देना। उसके घरवालों ने ऐसा ही किया। लेकिन अल्लाह तआला ने उसकी राख को जमा किया और उससे पूछा ऐसा तूने क्यूँ करवाया था? उसने जवाब दिया कि तेरे ही डर से ऐ अल्लाह! अल्लाह तआला ने उसी वजह से उसकी मग़्फ़िरत फ़र्मा दी। हज़रत उक़्बा बिन अम्र (रज़ि.) ने कहा कि मैंने आपको ये फ़र्माते सुना था कि ये शख़्स कफ़न चोर था। (दीगर मक़ाम : 3479, 6480)

٣٤٥٢- فَقَالَ: ((وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ : إِنَّ رَجُلاً حَضَرَهُ الْمَوْتُ، فَلَمَّا يَئِسَ مِنَ الْحَيَاةِ أَوْصَى أَهْلَهُ: إِذَا أَنَا مِتُّ فَاجْمَعُوا لِي حَطَبًا كَثِيْرًا أَوقِدُوا فِيْهِ نَارًا، حَتَّى إِذَا أَكَلَتْ لَحْمِي وَخَلَصَتْ إِلَى عَظْمِي فَامْتَحَشَتْ، فَخُذُوهَا فَاطْحَنُوهَا ثُمَّ انْظُرُوا يَوْمًا رَاحًا فَاذْرُوهُ فِي الْيَمِّ: فَفَعَلُوا. فَجَمَعَهُ فَقَالَ لَهُ : لِمَ فَعَلْتَ ذَلِكَ؟ قَالَ : مِنْ خَشْيَتِكَ. فَغَفَرَ اللهُ لَهُ)) قَالَ عُقْبَةُ بْنُ عَمْرٍو: ((وَأَنَا سَمِعْتُهُ يَقُولُ ذَاكَ، وَكَانَ نَبَّاشًا)).

[طرفاه في : ٣٤٧٩، ٦٤٨٠].

जिस शख़्स का ज़िक्र हुआ है वो बनी इस्राईल से था, बाब से यही वजहे मुनासबत है। मुर्दों को जलाना ऐसे ही ग़लत तसव्वुरात का नतीजा है जो ख़िलाफ़े फ़ित्रत है। इंसान की असल मिट्टी से है लिहाज़ा मरने के बाद उसे मिट्टी में दफ़न करना फ़ित्रत का तक़ाज़ा है।

3452,54. मुझसे बिश्र बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने कहा मुझको मअमर और यूनुस ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उन्हे उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी कि हज़रत आइशा (रज़ि.) और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, जब रसूलुल्लाह (ﷺ) पर नज़अ की हालत तारी हुई तो आप अपनी चादर चेहरा मुबारक पर बार-बार डाल लेते फिर जब शिद्दत बढ़ती तो उसे हटा देते थे। हुज़ूर (ﷺ) ने उसी हालत में फ़र्माया था, अल्लाह तआला की ला'नत हो

٣٤٥٣، ٣٤٥٤- حَدَّثَنِي بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنِي مَعْمَرٌ وَيُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّ عَائِشَةَ وَابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ قَالاَ : لَمَّا نَزَلَ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ طَفِقَ يَطْرَحُ خَمِيصَةً عَلَى وَجْهِهِ، فَإِذَا اغْتَمَّ كَشَفَهَا عَنْ وَجْهِهِ فَقَالَ وَهُوَ

यहूद व नसारा पर कि उन्होंने अपने अंबिया की क़ब्रों को सज्दा गाह बना लिया। आँहुज़ूर (ﷺ) इस उम्मत को उनके किये से डराना चाहते थे। (राजेअ : 435, 436)

كَذَلِكَ: ((لَعْنَةُ اللهِ عَلَى الْيَهُودِ وَالنَّصَارَى، اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ. يُحَذِّرُ مَا صَنَعُوا)).

[راجع: ٤٣٥، ٤٣٦]

3455. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे फ़रात क़ज़ार ने बयान किया, उन्होंने अबू हाज़िम से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की मज्लिस में पाँच साल तक बैठा हूँ। मैंने उन्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) की ये हदीष़ बयान करते सुना कि आपने फ़र्माया बनी इस्राईल के अंबिया उनकी सियासी रहनुमाई भी किया करते थे, जब भी उनका कोई नबी हलाक हो जाता तो दूसरे उनकी जगह आ मौजूद होते, लेकिन याद रखो मेरे बाद कोई नबी नहीं आएगा। हाँ मेरे नाइब होंगे और बहुत होंगे। स़हाबा ने अ़र्ज़ किया कि उनके बारे में आपका हमें क्या हुक्म है। आपने फ़र्माया कि सबसे पहले जिससे बेअ़त कर लो, बस उसी की वफ़ादारी पर क़ायम रहो और उनका जो हक़ है उसकी अदायगी में कोताही न करो क्योंकि अल्लाह तआला उनसे क़यामत के दिन उनकी रिआया के बारे में सवाल करेगा।

٣٤٥٥- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ فُرَاتٍ الْقَزَّازِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا حَازِمٍ قَالَ: قَاعَدْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ خَمْسَ سِنِينَ، فَسَمِعْتُهُ يُحَدِّثُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((كَانَتْ بَنُو إِسْرَائِيلَ تَسُوسُهُمُ الأَنْبِيَاءُ، كُلَّمَا هَلَكَ نَبِيٌّ خَلَفَهُ نَبِيٌّ، وَإِنَّهُ لاَ نَبِيَّ بَعْدِي، وَسَيَكُونُ خُلَفَاءُ فَيَكْثُرُونَ)). قَالُوا: فَمَا تَأْمُرُنَا؟ قَالَ: ((فُوا بِبَيْعَةِ الأَوَّلِ فَالأَوَّلِ، أَعْطُوهُمْ حَقَّهُمْ، فَإِنَّ اللهَ سَائِلُهُمْ عَمَّا اسْتَرْعَاهُمْ)).

ख़ुलफ़ा की इताअ़त के साथ ख़ुलफ़ा को भी उनकी ज़िम्मेदारियों के अदा करने पर तवज्जह दिलाई गई है। अगर वो ऐसा न करेंगे, उनको अल्लाह की अ़दालत में सख़्ततरीन रुस्वाई का सामना करना होगा, आज नामोनिहाद जुम्हूरियत के दौर में कुर्सियों पर आने वाले लोगों के लिये भी यही हुक्म है कि वो अपनी ज़िम्मेदारियों का एहसास करें मगर कितने कुर्सीनशीन हैं जो अपनी ज़िम्मेदारियों को सोचते हैं, उनको स़िर्फ़ वोट मांगने के वक़्त कुछ याद आता है बाद में सब भूल जाते हैं इल्ला माशा अल्लाह।

3456. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे अबू ग़स्सान ने बयान किया, कहा कि मुझसे ज़ैद बिन असलम ने बयान किया, उनसे अ़ता बिन यसार ने और उनसे ह़ज़रत अबू सईद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम लोग पहली उम्मतों के तरीक़ों की क़दम-ब-क़दम पैरवी करोगे यहाँ तक कि अगर वो लोग किसी साहिना के सूराख़ में दाख़िल हुए हों तो तुम भी उसमें दाख़िल होगे। हमने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या आपकी

٣٤٥٦- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ قَالَ : حَدَّثَنِي زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((لَتَتَّبِعُنَّ سَنَنَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُم شِبْرًا بِشِبْرٍ وَذِرَاعًا بِذِرَاعٍ، حَتَّى لَوْ سَلَكُوا جُحْرَ ضَبٍّ

को कहते हैं, कुछ आमाले सालेहा (नेक आमाल) का षवाब दस से भी ज़्यादा कई सौ गुना तक मिलता है।

3460. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उयैना ने बयान किया, उनसे अम्र ने, उनसे ताऊस ने, उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने हज़रत उमर (रज़ि.) से सुना उन्होंने कहा अल्लाह तआला फ़लाँ को तबाह करे। उन्हें क्या मा'लूम नहीं कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था, यहूद पर अल्लाह की ला'नत हो, उनके लिये चर्बी हराम हुई तो उन्होंने उसे पिघलाकर बेचना शुरू कर दिया। इस रिवायत को इब्ने अब्बास (रज़ि.) के साथ जाबिर और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है। (राजेअ : 2223)

٣٤٦٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو عَنْ طَاوُسٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَاتَلَ اللهُ فُلاَنًا، أَلَمْ يَعْلَمْ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((لَعَنَ اللهُ الْيَهُودَ حُرِّمَتْ عَلَيْهِمُ الشُّحُومُ فَجَمَلُوهَا فَبَاعُوهَا)). تَابَعَهُ جَابِرٌ وَأَبُوهُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.
[راجع: ٢٢٢٣]

तश्रीह: फ़लाँ से मुराद समुरह बिन जुन्दब हैं जिन्होंने काफ़िरों से जिज़्या में शराब वसूल कर ली थी और उसको बेचकर उसका पैसा बैतुलमाल को रवाना कर दिया, समुरह ने अपनी राय से ये इज्तिहाद किया था कि उसमें कोई क़बाहत नहीं, उन्होंने ये हदीष नहीं सुनी थी, इसलिये हज़रत उमर (रज़ि.) ने उनको कोई सज़ा नहीं दी। (वहीदी)

3461. हमसे अबू आसिम ज़िहाक बिन मुख़लद ने बयान किया, कहा हमको औज़ाई ने ख़बर दी, कहा हमसे हस्सान बिन अतिया ने बयान किया, उनसे अबू कब्शा ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरा पैग़ाम लोगों को पहुँचाओ! अगरचे एक ही आयत हो और बनी इस्राईल के वाक़ियात तुम बयान कर सकते हो, उसमें कोई हर्ज नहीं और जिसने मुझ पर क़स्दन झूठ बाँधा तो उसे अपने जहन्नम के ठिकाने के लिये तैयार रहना चाहिये।

٣٤٦١- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ الضَّحَّاكُ بْنُ مَخْلَدٍ أَخْبَرَنَا الأَوْزَاعِيُّ حَدَّثَنَا حَسَّانُ بْنُ عَطِيَّةَ عَنْ أَبِي كَبْشَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((بَلِّغُوا عَنِّي وَلَوْ آيَةً، وَحَدِّثُوا عَنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَلاَ حَرَجَ، وَمَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ)).

वाक़ियाते बनी इस्राईल बयान करने में कोई हर्ज नहीं है मगर इस ख़याल से कि न उनकी तस्दीक़ हो न तक़्ज़ीब सिवा उनके जो सहीह सनद से षाबित हों।

3462. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे सॉलेह ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, यहूद व नसारा (दाढ़ी वग़ैरह) में ख़िज़ाब नहीं लगाते, तुम लोग उसके ख़िलाफ़ तरीक़ा इख़्तियार करो (या'नी ख़िज़ाब लगाया करो)।

(दीगर मक़ाम : 5799)

٣٤٦٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: قَالَ أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى لاَ يَصْبُغُونَ، فَخَالِفُوهُمْ)).
[طرفه في: ٥٨٩٩].